http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 जनवरी 2021

भोजपुरी जंक्शन

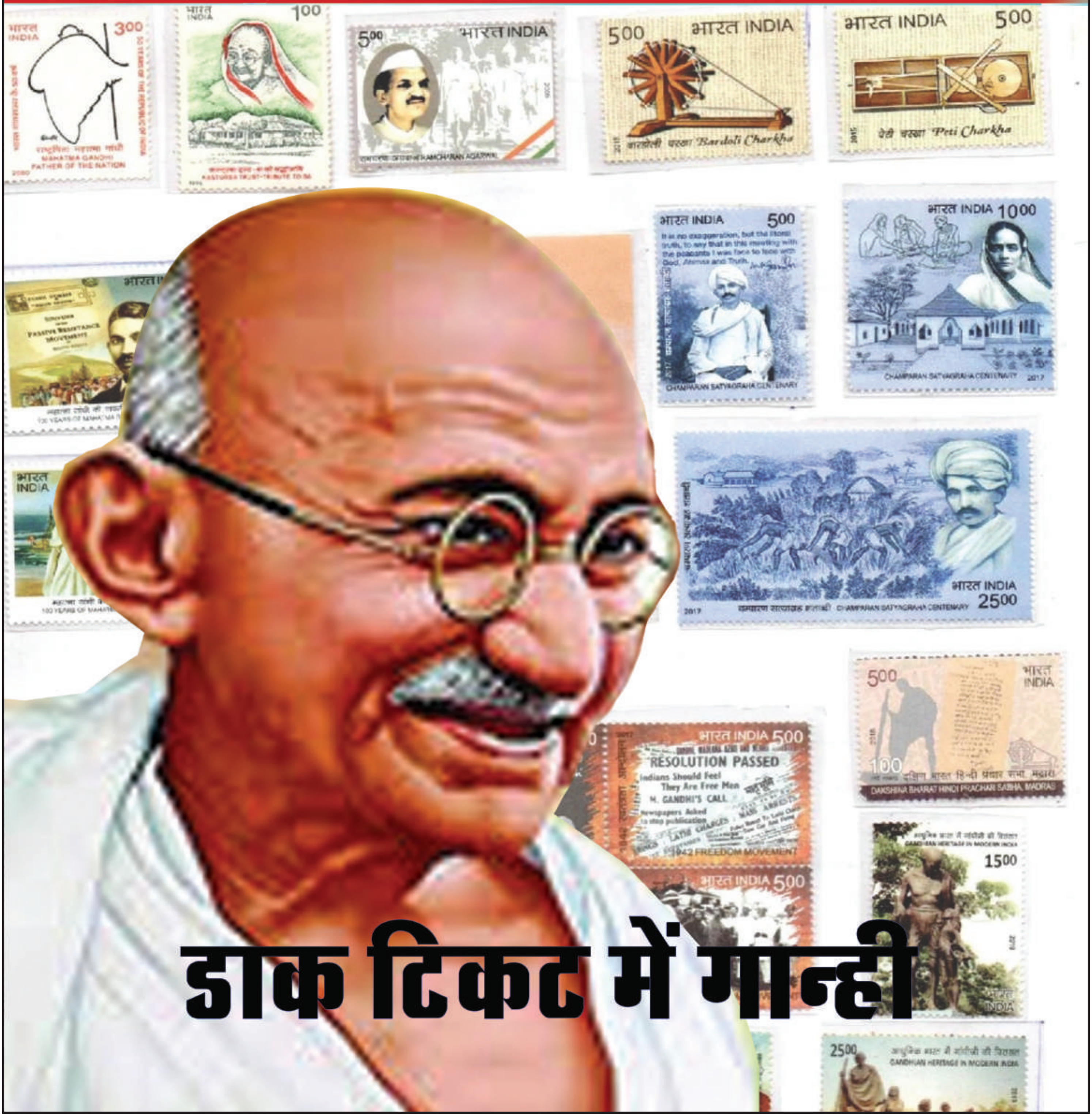

डाक टिकट में गान्ही

भोजपुरी जंक्शन

पर राउर स्वागत बा

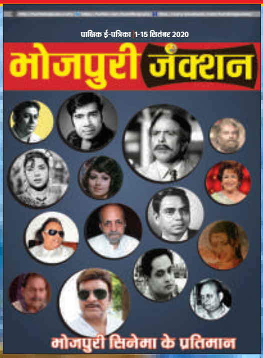

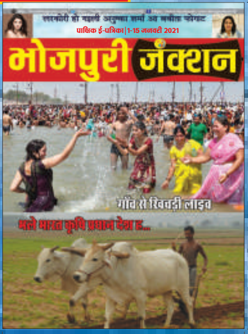

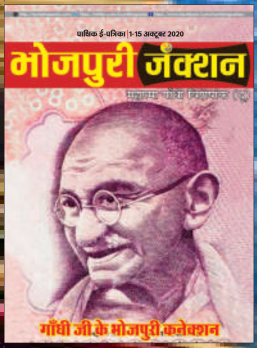

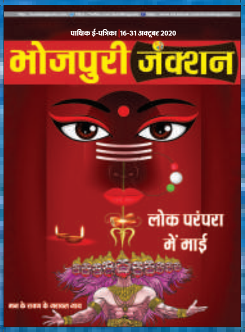

पढ़ीं भोजपुरी

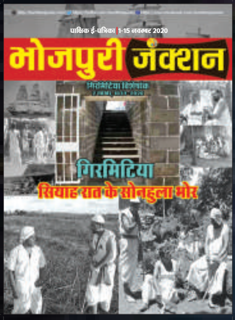

लिखीं भोजपुरी

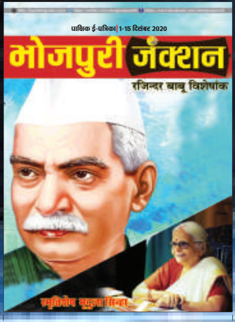

बोलीं भोजपुरी

वर्षः 1, अंकः 10, 16-31 जनवरी, 2021

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक ई-पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

समूह संपादक
रामबहादुर राय

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश्वर मिश्रा, सुरभि सिन्हा,
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा, जितेन्द्र सिंह,
रविकांत कुमार

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
डी- 160, सेक्टर- 63, नोएडा-201301,
फोन-0120-4804480,
humbhojpuria@hs.news
editor.humbhojpuria@hs.news

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/humBhojpuria
https://www.facebook.com/humbhojpuriaa/

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065 से प्रकाशित और अमर उजाला लिमिटेड, सी-21/22, सेक्टर-59, नोएडा 201301, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित। **संपादक-** मनोज भावुक।

हिन्दुस्थान समाचार समूह के प्रकाशन

एह अंक में

सुनीं सभे

पाक अउर कनाडा बा करीमा के कातिल..............06

गाँधी कथा

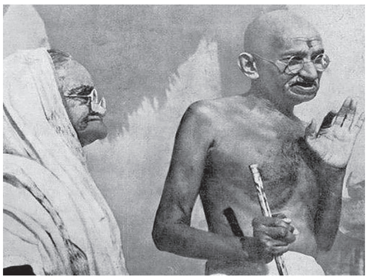

डाक टिकट में गान्ही.............. 08
गान्ही बाबा के नजर में मेहरारू 13
बापू के सनेस जन-जन तक पहुंचावे खातिर समर्पित दंपति 14

कोरोना कथा

कोविड-19 अउरी भोजपुरिया समाज 16
अफवाह के आग से घिरल कोरोना वैक्सीन 17

भोजपुरी साहित्य के गौरव

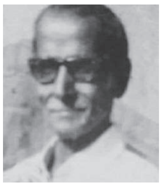

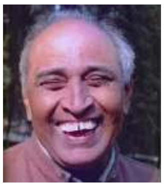

एगो अद्भुत कवि ब्रजबिहारी प्रसाद 'चूर' 18
आध्यात्म आ प्रगतिशील चेतना के समन्वित शख्सियतः प्रो. ब्रजकिशोर 21
गँवई संस्कृति के पोषक जनकवि कैलाश गौतम 24
भिखारी ठाकुर लोक जागरण के संदेश वाहक 26

सिनेमा

(32)

लोक धुन के
अपार भंडार रहनी चित्रगुप्त जी

आलेख

देखीं, कहिया भेटाला सही मायने में गणतंत्र 34

हास्य व्यंगय

ई गारी परान पियारी जी--!.............. 36

कविता

डहकत बा परान बिना मीत के - अविनाश चंद्र विद्यार्थी.......... 37

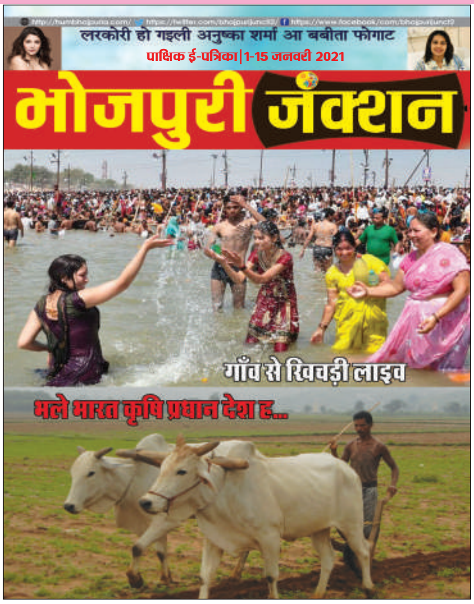

अइसन पत्रिका त बुक स्टालो प रहे के चाही

'**हम** भोजपुरिया' पत्रिका पढ़ि के मन मुदित हो गइल आ हम भावुक हो गइलीं। महतारी भाषा भोजपुरी के सैकड़ों पत्रिका पढ़े के मिलल बाकिर एकरा लेखा नीमन, उहो मल्टीकलर में आ बापू के शोधपरक रचना से भरल साहित्य के एक-एक पन्ना कीमती बा आ दिल के छू देबे वाला बाटे। विशेषांक देखिके हदय हुलास से भर गइल। बधाई के पात्र बानी श्रद्धेय भगवती प्र0 द्विवेदी जी, जे हमरा मो० प भेजले रहीं तब मालूम भइल एकरा बारे में। बुत अगते जानकारी भइल रहित त हमहूं एकरा से जुड़ गइल रहतीं। मनोकामना बा कि ई संग्रहणीय अंक अविरल गति से दिनों दिन उच्च शिखर प पहुंचे। अइसन पत्रिका त बुक स्टालों प रहे के चाही। एह से जुड़ल सभे व्यवस्थापक, संपादक अउर सहयोगी जन के हार्दिक अभिनन्दन बा।

- राउर अपने, सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी, कुदरा (कैमूर) बिहार

भोजपुरी जंक्शन कवनो भी भाषा के स्तरीय पत्रिका के बराबर बा

भावुक जी,

हर बेर के अइसन एहू बेर पत्रिका के अंक महत्वपूर्ण सामग्री लेके सोझा आइल बाटे। सामयिक आ ज्वलंत विषयन पर संपादकीय आ अग्रलेख देके रउआ पत्रिका के कवनो भाषा के स्तरीय पत्रिका के बराबरी में भोजपुरी जंक्शन के खड़ा कर देत बानी। भोजपुरी साहित्य के पुरोधा लोग के बारे में विमर्शपूर्ण लेख देके, ओह लोग के अवदान से नवकी पीढ़ी के परिचय करावे के लमहर काम हो रहल बा। सीनेमा के दुनिया आज समाज के बड़ा प्रभावित करेला आ लोग ओकरा बारे में जाने खातिर उत्सुक रहेला। रउआ ओहू पर सामग्री दे के एगो लमहर जमात के जिज्ञासा के शांत करत बानी। पत्रिका निकले आ कीर्तिमान स्थापित करे, एह शुभकामना के साथ साधुवाद।

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र, मुजफ्फरपुर

संकीर्ण मानसिकता के बदले के कोशिश बा "कहानी के प्लॉट"

मनोज जी के लिखल 'कहानी के प्लॉट' 1992 में बाबरी मस्जिद ध्वस्त भइला के पृष्टभूमि पर लिखल हिन्दू मुस्लिम प्रेम कथा पर आधारित बा। लेखक के लिहाज से भले ही एगो प्लॉट होई पर एगो पाठक के नजर से ई वास्तविक घटना बा। खाली इहे घटना नाही जुग-जुग से इ घटना चलल आवऽतिया, जेकर अंत शायदे कब्बो सुखांत भइल होई।

इ कहानी पढ़ला से साफ परिलक्षित होला कि प्रेम त्याग के दोसर रूप ह। कहानी के नायिका मुस्लिम होते हुए भी आपन हिन्दू प्रेमी खातिर शबनम से श्वेता बन गइली आ राहुल सरफराज बन गइले। मुस्लिम होते हुए भी शबाना मंदिर जाए में तनिको ना हिचकिचइली। इ कहानी असल प्रेम के पराकाष्ठा आ प्रमाण ह।

इ प्लॉट सदियन से आपन समय, नाव आ जगह बदल के समाज के सोझा आवत रहल बा जेकर ज्यादातर परिणाम हत्या अऊर दंगा के रूप में प्रकट भइल बा। इ जानते हुए भी कि सब धर्म आ जाति से बढ़ के प्रेम के धरम बा, तब्बो हमनी का एके स्वीकारे मे कोताही बरतेनी जा।

हमनी का समाज मे अंतरजातीय विवाह खातिर कमोबेश सहमति बनल बा बाकी जहां हिन्दू-मुसलमान के बात आवेला उहां तेवर बदल जाला। आज के हिन्दू अभिभावक बडा शान से कहेला कि 'कवनो जाति में बियाह करऽ परहेज नइखे बाकी उ मुस्लिम, ईसाई भा छोट जात ना होखे।' ठीक मुस्लिम परिवार के साथ भी इहे मानसिकता बा। ई सोच बदले में अभी बहुत समय लागी अऊर इ कहानी संकीर्ण मानसिकता के बदले के एगो जरिया बा।'

एह कहानी के नायक नायिका जदि चाहित लोग त प्रेम के स्वार्थ में वशीभूत होके भाग के बियाह कर सकत रहे लोग मगर आपन परिवार, समाज के मान मर्यादा सर्वोपरि मान के आपन पाक प्रेम के आहुति दे देहलस लोग। इहे त्याग इ कहानी के गरिमा बा।

लेखन एतना क्रमबद्ध आ दृश्यात्मक बा कि पाठक एक सांस में कहानी खत्म करे के बाध्य हो जाई। मन के झंझोरत एक संदेशात्मक कहानी खातिर लेखक के साधुवाद।

श्रीमती सरोज सिंह, लेखिका, लखनऊ

भोजपुरी जंक्शन के एक साल भइल पूरा

भोजपुरी जंक्शन (हम भोजपुरिआ) के प्रकाशन के एक साल पूरा हो गइल।

ई चौबीसवां अंक ह, जवना में चौदह अंक ''हम भोजपुरिआ'' के नाम से निकलल आ ओकरा बाद एह पाक्षिक पत्रिका के नाम हो गइल- ''भोजपुरी जंक्शन''। भोजपुरी जंक्शन के ई दसवां अंक ह।

एह पत्रिका के शुरूआत ''महात्मा गाँधी विशेषांक'' से भइल अउर ई चौबीसवां अंक भी गांधियेजी के समर्पित बा। बीचो में एगो अंक गाँधी जी पर निकलल रहे। एह तरह से चौबीस अंक में से तीन गो अंक त गांधियेजी पर बा। बाकी 21 गो अंक में बसंत विशेषांक, फगुआ विशेषांक, चइता विशेषांक, भगवान राम पर दू गो विशेषांक, कोरोना पर तीन गो विशेषांक, चीन के विरुद्ध मुहीम पर विशेषांक, वीर कुँवर सिंह विशेषांक, देशभक्ति विशेषांक, सिनेमा विशेषांक, दशहरा विशेषांक, गिरमिटिया विशेषांक, दियरी-बाती अउर छठ विशेषांक, डॉ. राजेंद्र प्रसाद विशेषांक अउर सम-सामयिक घटनन से लबरेज कई गो सामान्यो अंक बा। एह सब अंक में किसान, जवान आ विज्ञान सबकर जिक्र बा। भोजपुरी के गौरव जइसन स्तम्भ में धारावाहिक रूप में भोजपुरी के दिवंगत साहित्य सेवी के बात होता, ताकि नया पीढ़ी ई जान सके कि भोजपुरी में केतना-केतना काम भइल बा। केतना लोग अपना जिनगी के होम कइले बा। नयका सिनेमा के साथे पुरनको सिनेमा के बात होता ताकि नया पीढ़ी ई जान सके कि भोजपुरी सिनेमा के इतिहास केतना गौरवशाली रहल बा।

हम शुरूवे में ई वादा कइले रहनी कि ई पत्रिका समय के राग के साथे अपना गौरवशाली परंपरा के लेके चली। करेंट अफेयर्स के साथे अपना जड़ से जुडल रही। एह से देश-विदेश में जवन होता, ओकरा साथे-साथ भोजपुरी साहित्य, सिनेमा आ लोक में जवन काम हो चुकल बा, ओहू सब के समेटे-सहेजे-जोगावे आ नया पीढ़ी से रुबरु करावे के काम ई पत्रिका कर रहल बिया।

राउर पाती स्तम्भ के बहाने जवन रउरा सब के स्नेह-सुझाव आ प्रोत्साहन मिलेला, ऊ ऊर्जा से भर देला अउर काम कइला के एगो अलगे संतोष-सुख मिलेला।

कोरोना संकट अउर तमाम प्रतिकूल परिस्थिति के बावजूद हमनी के हमेशा ई कोशिश रहल कि गुणवत्ता बनल रहो। कुछ नया, अनोखा आ संग्रहणीय सामग्री हीं रउरा सब के परोसल जाय आ एह में सफलतो मिलल।

पत्रिका में भारत के अलावा सात समुन्दर पार के भोजपुरी लेखक लोग के भी सहयोग मिलल। स्थापित साहित्यकार लोग के साथे-साथ टेलीविजन अउर प्रिंट मिडिया के मुख्य धारा में कार्यरत साथी लोग के भी सक्रिय सहयोग मिलल। साँच कहीं त एही साथी-संघाती लोग के बल पर हमार नजर सड़क से संसद ले, गाँव से मेट्रो आ सात समुन्दर पार ले, मकई के लावा से पॉपकॉर्न ले, माड़ से राइस सूप ले रहल।

दरअसल भोजपुरी के ओकरा भदेसपन आ इंटेलेक्ट दुनों खातिर समग्रता में देखल जाए के चाहीं।

हम त देखते बानी रउरो आँख से, अपनो आँख से। 8वीं अनुसूची में भोजपुरी के शामिल कइल जाए खातिर जवन लॉलीपॉप दीहल गइल भा दीहल जात रहल बा, ओकरा के लेके खीस बरल त ई शेर भइल कि -

बात प बात होता, बात ओराते नइखे
कवनो दिक्कत के समाधान भेंटाते नइखे
भोर के आस में जे बूढ़ भइल, सोचत बा
मर गइल बा का सुरुज, रात ई जाते नइखे

बाकिर हार माने के त सवाले नइखे। भोजपुरिआ लोग हमेशा से अपना जिजीविषा, कर्मठता, जुझारूपन आ लड़ाकू तेवर खातिर जानल गइल बा। हमरा दोसरा गजल में ई आशावादी शेर फूटल कि-

होखे अगर जो हिम्मत कुछुओ पहाड़ नइखे
मन में जो ठान लीं त कहँवा बहार नइखे
कहियो त भोर होई, कहियो छंटी कुहासा
भावुक ई मान ल तू, आगे अन्हार नइखे

एही हौसला आ उम्मीद के साथे आगे बढ़े के बा।
रउरा सब के साथ-सहयोग के आकांक्षी-

प्रणाम।
मनोज भावुक

रवीन्द्र किशोर सिन्हा

पाक अउर कनाडा बा करीमा के कातिल

पाक द्वारा बलूचिस्तान में कइल जा रहल जुल्म-सितम के खिलाफ आवाज उठावे वाली प्रखर महिला एक्टिविस्ट करीमा बलोच के हाल ही में कनाडा में हत्या कर देहल गइल। करीमा बलोच भारत के मित्र रहली। ऊ प्रधानमंत्री मोदी के आपन भाई मानत रहली। उनका हत्या के जिम्मेदार कनाडा अउर पाक दूनू हीं बा।

पाकिस्तानी फौज के तरफ से बलूचिस्तान में कइल जा रहल जुल्म-सितम के खिलाफ आवाज उठावे वाली प्रखर महिला एक्टिविस्ट करीमा बलोच के हाल ही में कनाडा में सुनियोजित निर्मम हत्या में पाकिस्तान के धूर्त अउर शातिर इंटेलिजेंस एजेंसी आईएसआई के नाम सामने आ रहा बा। बलोच पाकिस्तान सरकार, सेना अउर आईएसआई के आँख के किरकिरी बन चुकल रहली। ऊ पाकिस्तान सरकार के काली करतूतन के कहानी लगातार दुनिया के बतावत रहली। एही से उनका के आईएसआई ठिकाने लगा देहलस। बलोच के कत्ल साफ कर देले बा कि कनाडा एक अराजक मुल्क के रूप में आगे बढ़ रहल बा। उहाँ पर खालिस्तानी तत्व त पहिलहीं से जड़ जमा चुकल बा। अब उहाँ पर आईएसआई भी सक्रिय हो गइल बा। ओकरा तरफ से अब ओ लोगन पर वार होत रही जे पाकिस्तान में मानवाधिकार आ जनवादी अधिकार के हनन अउर बढ़ रहल कठमुल्लापन के खिलाफ बोले ला।

गौर करीं कि ई सब ओही कनाडा में हो रहल बा जेकर प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो भारत सरकार के प्रवचन दे रहल बाड़े किसानन के आंदोलन के ले के। जस्टिन ट्रूडो कह रहल बाड़े कि भारत सरकार अपना आंदोलनकारी किसानन के मांग के माने। कहल जाला, जे शीशा के घर में रहेला ओकरा दोसरा के घर पर पत्थर ना फेंके के चाहीं। जस्टिन ट्रूडो के अपने देश में जंगल राज वाली स्थिति बन रहल बा, पर ऊ भारत के आंतरिक मामला में बेशर्मी से हस्तक्षेप करे से बाज नइखन आवत। ऊ अभी तक बलोच के कत्ल पर एक भी शब्द नइखन बोलले। काहे? उनका ये सवाल के जवाब त विश्व के देवहीं के परी।

करीमा बलोच के भारत से बहुत उम्मीद रहे। ऊ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आपन भाई मानत रहली। दरअसल, साल 2016 के रक्षाबंधन पर करीमा बलोच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राखी भेजले रहली अउर आपन भाई बनवले रहली। ये राखी के साथ ही करीमा बलोच मोदीजी से बलूचिस्तान के आजादी के गुहार लगवले रहली। साल 2016 में

पाकिस्तानी सेना स्वात घाटी अउर बलूचिस्तान में विद्रोह के दबावे खातिर आये दिन टैंक अउर लड़ाकू विमानन तक के इस्तेमाल कर रहल बा।

करीमा बलोच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम एक संदेश भेजले रहली, जेमे ऊ कहले रहली कि रक्षाबंधन के दिन एगो बहिन रउआ के भाई मान के कुछ मांगे के चाहऽतारी। बलूचिस्तान में केतने भाई शहीद हो गइले आ वापस ना अइले। बलूचिस्तान के लोग रउआ के मानेला। अइसे में रउआ दुनिया के सामने हमनीं के आंदोलन के आवाज बनीं। दरअसल करीमा बलोच 2016 से हीं कनाडा में शरण ले के रहत रहली। कनाडा के प्रधानमंत्री बतावस कि ऊ बलोच के पर्याप्त सुरक्षा काहे ना देहलन? हालांकि, कुछ वक्त पहिलही ऊ एक वीडियो संदेश में अपना जान के खतरा होखे के बात कहले रहली। करीमा बलोच के गिनती दुनिया के 100 सबसे प्रेरणादायी महिला लोग में कइल जात रहे। करीमा बलोच के कत्ल से समझ आ जाता कि पाकिस्तान सरकार बलूचिस्तान में चल रहल अलगाववादी आंदोलन के ले के केतना परेशान बा।

बलूचिस्तान पाकिस्तान के सबसे पिछड़ल सूबा ह। विकास से कोसों दूर बा बलूचिस्तान। बलूचिस्तान पाकिस्तान से शुरू से ही अलग होखे के चाहऽता। कायदे से ऊ बंटवारा के समय भारत के साथ ही रहे के चाहत रहे। स्वतंत्र राज्य रहे ही, पर पंडित नेहरु ओके उदारतापूर्वक पाकिस्तान के दान में दे देहले। बलूचिस्तान पाकिस्तान के पश्चिम के राज्य ह जेकर राजधानी क्वेटा ह। बलूचिस्तान के पड़ोस में ईरान आ अफगानिस्तान बा। 1944 में ही बलूचिस्तान के आजादी देवे खातिर माहौल बनत रहे। लेकिन, 1947 में एके जबरन पाकिस्तान में शामिल कर लेहल गइल। तबे से बलूच लोग के संघर्ष चल रहल बा अउर ओतने ही ताकत से पाकिस्तानी सेना आ सरकार बलूच लोगन के कुचलत रहल बा। पाकिस्तानी सेना के ताकत ही ओके पाकिस्तान के हिस्सा बना के रखले बा। पर मजाल बा कि जस्टिन ट्रूडो कभी एक शब्द भी बलूचिस्तान के स्थिति पर भी बोलले होखस। पाकिस्तानी सेना स्वात घाटी अउर बलूचिस्तान में विद्रोह के दबावे खातिर आये दिन टैंक आ लड़ाकू विमानन तक के इस्तेमाल करे ला। जवन पाकिस्तान बात-बात पर कश्मीर के रोना रोवत रहेला, ऊ कभी भी बलूचिस्तान में कवनों विकास कार्य ना कइलस। बलूचिस्तान कमोबेश अंधकार के युग में जी रहल बा। का ई सब जस्टिन ट्रूडो के देखाई नइखे देत? बलूचिस्तान में चल रहल सघन पृथकतावादी आंदोलन पाकिस्तान सरकार के नाक में दम कर रखले बा, ई सब जानतारे पर ट्रूडो अपना अनभिज्ञता के स्वांग भर रहल बाड़े।

पाकिस्तान के चार सूबा बाः पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान अउर खैबर-पख़्तूनख़्वा। एकरा अलावा पाक अधिकृत कश्मीर अउर गिलगित-बल्टिस्तान भी पाकिस्तान द्वारा नाजायज ढंग से नियंत्रित बा, जेकरा के पाकिस्तान अवैध रूप से भारत से हड़प लेले बा। एक न एक दिन ई दूनू जिला भारत से मिलबे करी। पाकिस्तानी सेना बलूचिस्तान में महिला सबके साथ आये दिन खुलेआम बलात्कार करत आ रहल बा। मर्द सबके बड़ी बेरहमी आ बेदर्दी से मारेला। बलूचिस्तान के जनता तब से पाकिस्तान से अउर ही दूर हो गइल रहे जब कुछ साल पहिले बलूचिस्तान के एकछत्र नेता नवाब अकबर खान बुगती के हत्या कर देहल गइल रहे। उनके हत्या में पाकिस्तान के पूर्व तानाशाह जनरल परवेज मुशर्रफ के हाथ बतावल जाला।

बहरहाल, बलूचिस्तान के अवाम के कहना बा कि जइसे 1971 में पाकिस्तान से कट के बांग्लादेश बन गइल रहे ओही तरह एक दिन बलूचिस्तान अलग देश त बनिये जाई। बलूचिस्तान के लोग कवनो भी कीमत पर पाकिस्तान से अलग हो जाए के चाहऽता। करीमा बलोच के हत्या के लेके कनाडा के प्रधानमंत्री भलही ना बोलस पर भारत के बलूचिस्तान के जनता के हक में आपन आवाज बुलंद करहीं के होई। बलोच के शहादत कवनों भी सूरत में खाली ना जाये के चाहीं। ये बीचे, भारतीय नागरिकन के, खासतौर पर पंजाब प्रांत से संबंध रखे वालन के, कनाडा के ले के आपन सोच बदले के चाहीं। रउआ कभी मौका मिले त सोमवार से शुक्रवार तक के बीच राजधानी के चाणक्यपुरी इलाकन के चक्कर लगा लीं। एने सुबह से ही रउआ बड़ी तादाद में महिला, पुरुष आ बच्चा तइयार घूमत मिलिहें। इनका के देख के लागे ला, मानी ई सब लोग सुबह ही कवनों विवाह समारोह में भाग लेवे खातिर जा रहल बाड़े। ई लोग अधिकतर कनाडा हाई कमीशन के आसपास घूमत रहेला। ई लोग अलग-अलग समूहन में खड़ा होके आपस में बतियावत भी रहेले। अइसे त कुछ अउर दूतावासन आ उच्चायोगन के बाहर भी वीजा के चाहत रखे वाला लोग खड़ा होखेलें, पर कनाड़ा हाई कमीशन के त का काहे के। एने आवे वालन के चेहरा के भाव पढ़ला पर त लागेला मानी वीजा के जगह भीख मांग रहल बा लोग। का इनका ओ देश में जाये के पहिले सोंचे के ना चाहीं जहाँ पर भारत विरोधी गतिविधि लगातार बढ़ रहल बा आ जवन अराजकता के जाल में फँस रहल बा?

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार अउर पूर्व सांसद हईं।)

सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी

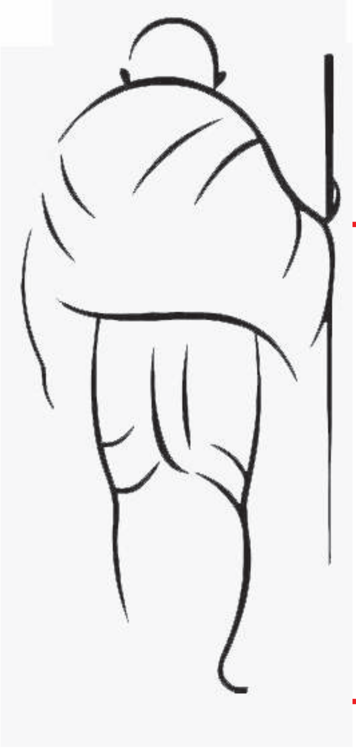

डाक टिकट में गान्ही

स्वतंत्रता के पहिला वर्षगांठ 15 अगस्त 1948 में भारत सरकार के संचार मंत्रालय के डाक विभाग द्वारा डाक टिकट के एगो शृंखला जारी भइल जेकरा प बापू के चार गो डाक टिकट निकलल। डेढ़ आना, साढ़े तीन आना, बारह आना अउर दस रोपेया मूल्य वर्ग के ई टिकट सिल्क मिश्रित कागज प छपल। भारतीय डाक टिकट इतिहास में पहिला बेर जारी भइल। एह डाक टिकट में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू के प्रयोग भइल बा। इहे ना अइसन कागज प छपल बा जेकरा में वाटर मार्क ना रहे। गान्ही बाबा जिनगी भर विदेशियन के बहिष्कार कइलें बाकिर उनकर ई डाक टिकट स्वीटजरलैंड से छप के आइल रहे। ई डाक टिकट अपना दुर्लभता के चलते स्वतंत्र भारत के सबसे कीमती टिकट बा।

2 अक्टूबर 1969 में गान्ही शताब्दी मनावल गइल जेकरा उपलक्ष में आपन देश में चार गो विशेष डाक टिकट के प्रकाशन भइल। 20 पैसा के टिकट प बा-बापू , 75 पैसा के टिकट प गान्ही के खिलत चेहरा के एगो मुद्रा, 1 रुपये के टिकट प दांडी मार्च (नंदलाल बोस के रेखाचित्र) अउर 5 रू० के डाक टिकट प चरखा कातत बापू के मनोहारी चित्र छपल बा।

मोहनदास करमचंद गान्ही, भारत का पूरा दुनिया में शायद कोई अइसने आदमी होई, जे उनका के ना जानत होखी आ उनका प्रति श्रद्धा अउर सम्मान ना रखत होई।

सत, शांति अउर अहिंसा के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मा गान्ही एगो अद्भूत व्यक्ति रहलें, जे भारत के आजादी दिलवलें, साथे-साथ विश्व में अमन चैन, भाई चारा, सुख समृधि, स्वच्छता अउर खुशहाली खातिर सनेश देत रहन। भारत सरकार एह साबरमती के संत के सम्मान में डाक टिकट, नोट, सिक्का आदि जारी कइलस। संसार में कवनो अइसन चीज नइखे जे पर महात्मा गान्ही स्थापित नइखन। आपन देश भारत में करीब सौ गो डाक टिकट जारी भइल बा। एकरा अलावे डेढ़ सौ देश में ढाई सौ डाक टिकट, पोस्टकार्ड, लिफाफा, अन्तदेर्शीय, मिनियेचर, मैक्सिगकार्ड, कवर, शीटलेट आदि प्रकाशित भइल बा।

स्वतंत्रता के पहिला वर्षगांठ 15 अगस्त 1948 में भारत सरकार के संचार मंत्रालय के डाक विभाग द्वारा डाक टिकट के एगो श्रृंखला जारी भइल जेकरा प बापू के चार गो डाक टिकट निकलल। डेढ़ आना, साढ़े तीन आना, बारह आना अउर दस रोपेया मूल्य वर्ग के ई टिकट सिल्क मिश्रित कागज प छपल। भारतीय डाक टिकट इतिहास में पहिला बेर जारी भइल। एह डाक टिकट में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू के प्रयोग भइल बा। इहे ना अइसन कागज प छपल बा जेकरा में वाटर मार्क ना रहे। गान्ही बाबा जिनगी भर विदेशियन के बहिष्कार कइले बाकिर उनकर ई डाक टिकट स्वीटजरलैंड से छप के आइल रहे। ई डाक टिकट अपना दुर्लभता के चलते स्वतंत्र भारत के सबसे कीमती टिकट बा।

बापू के सहयोगिनी गान्ही जी के बापू बनावे में काफी योगदान देलींन, जे गांधी जी के प्रेरणास्त्रोत रहली आ मरते दम तक जेल में गांधी के साथ देत मरके अमर हो गइलीं। भारत सरकार कस्तूरबा गान्ही के इयाद में 20 वाँ पुनतिथि प 22 फरवरी 1964 में 15 पै0 के भगवा रंग में डाक टिकट जारी क के उनका के सम्मानित कइलस आ अपना के गौरव अनुभव करता।

2 अक्टूबर 1969 में गान्ही शताब्दी मनावल गइल जेकरा उपलक्ष में आपन देश में चार गो विशेष डाक टिकट के प्रकाशन भइल। 20 पैसा के टिकट प बा-बापू, 75 पैसा के टिकट प गान्ही के खिलत चेहरा के एगो मुद्रा, 1 रुपये के टिकट प दांडी मार्च (नंदलाल बोस के रेखाचित्र) अउर 5 रू० के डाक टिकट प चरखा कातत बापू के मनोहारी चित्र छपल बा।

23 दिसम्बर 1970 में डाक टिकट प्रर्दशनी भइल। एह मोका प एगो टिकट जारी भइल। जेमे बा-बापू के डाक टिकट के छवि चित्र के मैग्नेफाइन ग्लास से देखत टिकट निकलल। डाक टिकट संग्रह के बढ़ावा देवे खातिर सरकार एकरा के छपलस।

गांधी आ नेहरू के स्नेह संबंध प डाक विभाग द्वारा 18 अगस्त 1973 में 20 पैसा के एगो डाक टिकट निकलल जेकरा प गान्ही-नेहरू के हंसत बतियावत मुद्रा जारी भइल बा।

भारतीय डाक तार विभाग मार्च 1979 में विश्व बाल वर्ष के मोका प 1 रू0 आ 25 पै0 के डाकटिकट 5 मार्च 1979 में जारी कइलस जेकरा प बच्चे की मुस्कान-राष्ट्र की शान' अउर गांधी जी संग एगो लइका के स्नेह छाया के दरसावल गइल बा।

महात्मा गान्ही के 125वां वर्षगांठ के अवसर प 2 अक्टूबर 1994 के दूठो खूबे सुग्धर डाक टिकट 6 रू० आ 11 रू0 के जारी भइल। टिकट के पृष्ठभूमि में छपल तिरंगा प गान्धी जी के चार गो चित्र के साथ उनकर सनेश 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' छपल बा।

बापू 12 मार्च 1930 में नमक कानून तोड़े खातिर ऐतिहासिक 'दांडी यात्रा' प रवाना भइलें। 6 मई 1930 के नीमक कानून तोडलें। भारत सरकार एह मोका प खूबे सुग्धर सोनहुला दुगो डाक टिकट 35-35 पै0 के 6 अक्टूबर 1980 के निकललस। जेकरा प गान्ही जी के नीमक उठावत आ दांडी मार्च करत दरसावल गइल बा।

8 अगस्त 1942 के अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी गान्ही जी के अगुआई में अहिंसा के सिद्धान्त प चलके बड़ पैमाना प एगो जन संग्राम छेड़े खातिर संकल्प लेलन। कमेटी के मांग रहे कि अंगरेज हुकूमत भारत से पूरा तरह से हट जाय। 'भारत छोड़ो प्रस्ताव' में विदेशी सत्ता के आहअवान के इयाद में 50 पै0 के एगो डाक टिकट 9 अगस्त 1983 में जारी भइल, जेकरा प गान्ही- नेहरू अउर दोसर नेता के साथे प्रस्ताव प विचार विमर्श करत देखावल गइल बा।

कांग्रेस शताब्दी के सौ बरिस के पूरा भइला प चार गो डाक टिकट (एक में चार) 28 दिसम्बर 1985 के जारी भइल जेकरा प कांग्रेस के साठो सदस्यन के चित्र छपल बा जेमें गान्ही जी के भी दरसावल गइल बाटे। डाक विभाग द्वारा 'भारत छोड़ो आंदोलन के 50 वां वर्षगांठ प दूगो डाक टिकट 1 रू0 आ 2 रू० के टिकट प गान्ही द्वारा दिहल गइल नारा - 'करेंगे या मरेंगे' आ गान्धी जी के दसखत के साथ छापल गइल। ई डाक टिकट 9 अगस्त 1992 के जारी भइल।

महात्मा गान्ही के 125वां वर्षगांठ के अवसर प 2 अक्टूबर 1994 के दूगो खूबे सुग्धर डाक टिकट 6 रू० आ 11 रू0 के जारी भइल। टिकट के पृष्ठभूमि में छपल तिरंगा प गान्धी जी के चार गो चित्र के साथ उनकर सनेश 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' छपल बा।

भारत दक्षिण अफ्रीका सहयोग के एह सामान्य विरासत आ महात्मा गान्ही अउर नेल्सन मंडेला के बीच संबंध के इयाद में डाक विभाग द्वारा गान्ही जी के 125 वां वर्षगांठ प 2 अक्टूबर 1995 में लाल रंग के वगार्कार दूगो (एक में सटल) 1 रू0 आ 2 रू0 के डाकटिकट जारी भइल। जेकरा प गान्ही जी के हिन्दी आ अंग्रेजी में दसखत बाटे। ठीक एही दिन अफ्रीका में भी इहे टिकट दूसर रंग में जारी भइल।

भारत सरकार द्वारा कस्तूरबा ट्रस्ट सेवा के 50 बरिस के उपलक्ष में 1 रू0 के स्मारक डाक टिकट 22 फरवरी 1996 के जारी भइल। एह टिकट प कस्तूरबा गांही के तस्वीर के साथे ट्रस्ट के विल्डिंग के भी चित्र छपल बा।

महात्मा गान्ही के 50वां पुन तिथि प चार गो संयुक्त डाकटिकट 2रू0, 6रू०, 10 आ 11रू0 के सेट 30 जनवरी 1998 में भारत सरकार द्वारा जारी भइल। एह टिकट में गान्ही जी के कठिन परिश्रम के महत्वपूर्ण पहलू के प्रतीकात्मक झांकी के दरसावल गइल बा।

भारत गणराज्य के 50वाँ वर्षगांठ प राष्ट्रपिता महात्मा गान्ही के एगो 1 रू० के डाक टिकट 27 जनवरी 2000 में निकलल, जेकरा प लोकप्रिय चित्रकार रंगा के बनावल बापू के रेखा चित्र अंकित बा।

महात्मा गान्ही एगो सहस्त्राब्दि पुरूष के इयाद में 4-4 रू के दुगो सयुंक्त डाक टिकट 2 अक्टूबर 2001 में जारी भइल। डाक टिकट में बापू के सनेस अउर प्रासंगिकता के रेखाचित्र कइल अभिप्रेत बा जे समय अंतराल के सीमा से परे बा अउर पिछला बेरि के सहस्त्राब्दि लेखा नयका सहस्त्राब्दि में ओतने प्रासंगिक बाटे।

डाक विभाग द्वारा दांडी मार्च के 75वां दिवस प चार गो 5-5 रू० के डाकटिकट 6 अप्रैल 2005 में छपल। पहिलका टिकट प गान्ही के अगुआई में यात्रियन के एगो झांकी, दूसरका में गान्ही के छवि चित्र, तीसरका में गांधी बाबा के लिखल पंक्ति- 'हम और ताकत की इस जंग में मैं दुनिया की हमदर्दी चाहता हूँ के छापल गइल बा आ चउथका टिकट प गान्ही जी के नीमक उठावत देखावत गइल बाटे।

सत्याग्रह के शतवर्षिकी प 5-5 रुपया के चार गो स्मारक डाकटिकट के सेट भारत के डाक विभाग 2 अक्टूबर 2007 के जारी कइलस जेकरा प सत्याग्रह के अभ्युदय के विभिन्न अवस्था के सुग्घर आ प्रेरक चित्रण बा।

मानव अधिकार के सर्वभौम घोषणा 10 दिसम्बर 1948 के भइल रहे। जेकरा में अंतर्निहित माननीय गरिमा, भेदभाव विहीन समाज, समानता, न्याय अउर सार्व भौमिकता के तहत 5 रू0 के एगो डाकटिकट 10 दिसम्बर 2008 के जारी भइल टिकट प महात्मा गान्ही के साथे अब्राहिम लिंकन, मदर टेरेसा अउर मार्टिन लूथर किंग के छवि चित्र छपल बाटे।

भारत दक्षिण अफ्रीका सहयोग के एह सामान्य विरासत आ महात्मा गान्ही अउर नेल्सन मंडेला के बीच संबंध के इयाद में डाक विभाग द्वारा गान्ही जी के 125 वां वर्षगांठ प 2 अक्टूबर 1995 में लाल रंग के वर्गाकार दूगो (एक में सटल) 1 रू0 आ 2 रू0 के डाकटिकट जारी भइल। जेकरा प गान्ही जी के हिन्दी आ अंग्रेजी में दसखत बाटे। ठीक एही दिन अफ्रीका में भी इहे टिकट दूसर रंग में जारी भइल।

भारत के गांव के बदहाली के खुशहाली में बदले खातिर चरखा अउर खादी एगो महत्वपूर्ण आर्थिक औजार हवे। एकरा के गांधी बाबा आपन जीनगी में उतरलन। भारत के खादी अउर ग्रामीन उघोग के धरोहर समझलें। खादी के बढ़ावा देवे खातिर इंडिपेक्स-2011 के अवसर प भारतीय डाक विभाग महात्मा गान्ही के इयाद में सौ रू के खादी के डाकटिकट 12 फरवरी 2011 में जारी कइलस, जे पर बापू के दसखतो बाटे। खादी के ई टिकट दुनिया के पहिलका डाक टिकट के श्रेय मिलल बा।

फिलैटली दिवस 12 अक्टूबर 2013 में 20 रू0 के मिनिशीट प्रकाशित भइल बा जेकरा प आपन देश के अधिक प्रख्यात आ प्रभावशाली नेता मोहनदास करमचंद गांधी, के स्वतंत्र अउर लोकतांत्रिक भारत के निरमान में मुख्य भूमिका निभवला के प्रति श्रद्धांजलि अरपित करत डाकटिकट जारी भइल।

महात्मा गान्ही के वापसी के सौ बरिस के मोका प 8 जनवरी 2015 में 5 रू0 अउर 25 रू० के दुठो डाक टिकट जारी भइल, जेकरा प एक टिकट में नवजवान बापू अउर दुसरका में बा-बापू के छविचित्र स्थापित कइल बाटे। गान्ही जी के 20 वां शताब्दी के अग्रणी राजनेता के रूप में उभरला के सफर में उनका दक्षिण अफ्रीका प्रवास में महत्वपूर्ण चरन सिद्ध भइल रहे। एहीजा रह के आपन राजनैतिक विचार नैतिक दृष्टिकोन अउर नेतृत्व कौशल के विकास कइलन।

महात्मा गान्ही चरखा के एगो अर्थ आ व्यवस्था देलन। चरखा उनका के प्रेम के दिव्य नियम के निरंतर घुमते पहिए के इयाद करावता। गांधी जी खातिर चरखा प सूत कातल अहिंसा के प्रतीक के साथे-साथ तपस्या, एगो संस्कार, आध्यात्मिक उत्थान के माध्यम, धरम, स्वावलंवन अउर आत्मनिर्भरता के प्रतीक, श्रम आ आदमी के कीमत के प्रतिष्ठा बा। एकरे इयाद में भारत सरकार द्वारा गांधी जी के दुगो चरखा के डाकटिकट 15 अक्टूबर 2015 में 5-5 रू0 के जारी भइल। पहिलका टिकट प पारम्परिक चरखा आ दोसरका प पोर्टेवल चरखा, जेकर डिजाइन खुद गान्ही जी यरवदा जेल में तइयार कइले रहन।

डाक विभाग चंपारण के सौ बरिस पूरा भइला के अवसर प तीन गो डाकटिकट नील खेती के तहत नील रंग में 5.10 आ 25 रू0 के डाकटिकट 13 मई 2017 में जारी भइल बा। 4 मार्च 1919 में गवरनर जनरल के औपचारिक दशखत होला के बाद ई विधेयक कानून बनल। गान्ही जी के आगमन के एक बरिस बाद एह क्षेत्र में फइलल शोषण आधारित तिनकठिया प्रणाली के अंत भइल।

‘भारत छोड़ो आंदोलन’ के प्रभाव से अंगरेज सब ई महसूस कइलन कि ऊ भारत पर बहुत दिन तक सफलता पूर्वक शासन ना कर सकेलें तब ओहनी के शांति पूर्वक आ गरिमापूर्वक तरीका से देश से वापस लौटे के बारे में सोचे लगलन। भारत छोड़ो आंदोलन के जनमानस के शक्ति के पहचान क के भगलसन। एकरा इयाद में डाक विभाग द्वारा 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन के 75वॉं बरिस पूरा भइला के उपलक्ष में आठ गो स्मारक डाकटिकट के सेट 9 अगस्त 2017 के जारी भइल।

दक्षिण राज्य में हिन्दी के आम संपर्क भाषा के रूप में प्रचारित करे खातिर राष्ट्रपिता महात्मा गान्ही 1918 में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के स्थापना कइलें। ई संस्था भारत में हिन्दी पढ़ावे वाला सबसे बड़ संस्था बा जे हर साल सात लाख हिन्दी भाषा भारतीयन के हिन्दी पढावे लें। डाक विभाग द्वारा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के शताब्दी प 5 रू के एगो डाकटिकट 17 जून 2018 में जारी भइल बा। टिकट प हिन्दी लिखत चिट्ठी के साथ बापू जी के चित्र छपल बाटे।

डाक विभाग महात्मा गांधी के साथ पीटरमरिट्वर्ग स्टेशन प भइल घटना के 125 बरिस आ नेल्सन मंडेला के जन शताब्दी विषय प भारत अउर दक्षिण अफ्रीका के बीच दूगो स्मारक डाकटिकट 5 आ 25 रू0 के 26 जुलाई 2018 के जारी कइलस, जेकरा प भारत के ओरि से महात्मा गांधी अउर दक्षिण अफ्रीका के ओरि से नेल्सन मंडेला के चित्र अंकित करल गइल बा। ठीक इहे टिकट अफ्रीका से भी जारी भइल।

महात्मा गांधी के 150वां जयंती के उपलक्ष में भारत सरकार के संचार मंत्रालय के डाक विभाग, स्वतंत्र भारत में बापू के सम्मान में पहिला बेर सात गो गोल (वृताकार) डाकटिकट 5, 12, 20, 22, 25, 25 आ 41 रू0 के 2 अक्टूबर 2018 में जारी क के अपना के सौभाग्यशाली समझत बा। टिकट के माध्यम से भारतीय डाक गान्ही जी के समूचा व्यक्तियन के कुछ आयाम के प्रदर्शित करे के प्रयास कइले बाटे अउर एकरा जरिये एह महापुरूष के श्रद्धांजलि अर्पित कइल बाटे।

बापू के 150वां जन्मदिन के मोका प चार गो डाक टिकट 2 अक्टूबर 2020 के जारी भइल। डाक टिकट पर स्वास्थ्य, प्राकृतिक चिकित्सा, पारिस्थितिकी, पर्यावरन, आत्मनिर्भरता आ शिक्षा के प्रयोग के नया-तालीम बा।

डाक विभाग द्वारा बापू के 150वां जयंती समारोह के तहत उनका के श्रद्धांजलि स्वरूप 'अहिंसा परमो घर्मः' विषय प दुगो स्मारक डाक टिकट के सेट जारी क के अपना के गौरव अनुभव करता। ई डाकटिकट सावरमती आश्रम के 17 जून 1919 के स्थापना तिथि के धेयान में रखके 17 जून 2019 के 15-15 रू० के दुगो डाकटिकट प्रकाशित भइल।

आधुनिक भारत के गांधी जी के विरासत विषय प 15 आ 25 रू० के डाकटिकट स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 2019 के जारी भइल जेकरा प गान्ही जी के यात्रा अउर मूर्ति के दरसावल गइल बा।

डाक विभाग राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सम्मान में छव गो 25-25 रू0 के अष्ठकोण आकार में खूबे मनभावन अउर सुग्घर डाकटिकट 2 अक्टूबर 2019 में बापू के जवानी से लेके बुढ़ापा तक के आकर्षक छवि आ बा-बापू के दुर्लभ फोटो के साथे तीनों वानर के भी चित्र छपल बा। दुर्लभ फोटो में नेल्सन मंडेला, मार्टिन लूथर किंग, आइन्सटाइन अउर हो ची मिन्ह के तस्वीर स्थापित बा।

देश के आत्मनिर्भरता के परिकल्पना के जनम बापू के भारत के स्वावलंबी बनावे के अवधारणा रहे जे उनकर स्वदेशी दर्शन के आधार बाटे। बापू के 150 वां जन्मदिन के मोका प चार गो डाक टिकट 2 अक्टूबर 2020 के जारी भइल। डाक टिकट पर स्वास्थ्य, प्राकृतिक चिकित्सा, पारिस्थितिकी, पर्यावरन, आत्मनिर्भरता आ शिक्षा के प्रयोग के नया-तालीम बा।

सबसे पहिले विदेशी के रूप में ब्रिटेन महात्मा गान्ही के डाकटिकट अपना देश से जारी कइलस। साथे-साथ अमेरिको बापू के इयाद में टिकट निकललस।

बापू के जन्मशती पर मारीशस सरकार छव गो बहुरंगी सुग्घर डाकटिकट के मिनियेचर सीट 1 जुलाई 1969 में जारी कइलस जे में गान्ही जी के छव किसिम के फोटो अंकित बा।

एकरा अलावें-जरमनी, भूटान, फ्यूजेरा, चिली, मैक्सिको, माल्टा, ब्राजील, ग्रेनेडा, श्रीलंका, टोगो, एंटिगुआ, शारजाह, सीरिया, बर्मा, मारियो, त्रिनिदाद, रूस, पनामा, साइप्रस, तुर्की, इरान, बंगलादेश,

लिसेटिन, मलावि, मोकाम्विया, एस टॉम ई प्रिन्स, घाना, लिवॉन, माईनमार, मालदिवेस, युगाना आदि सैकड़ों देश गान्ही जी के सम्मान में डाकटिकट निकाल के अपना के गौरवान्वित अनुभव करताड़सन।

(लेखक सुरेंद्र कृष्ण रस्तोगी समीक्षक, आलोचक आ कई पत्र-पत्रिकन के संपादक हईं। लगभग दू दशक से गांधी के प्रतिरूप में बापू के संदेश वाहक बनल बानी जेकरा खातिर पांच मैडल आ पच्चीस पुरस्कार मिल चुकल बा। जहानाबाद, कुदरा, भभुआ, बिहार में निवास बा।)

अनुराधा कृष्ण रस्तोगी

गान्ही बाबा के नजर में मेहरारू

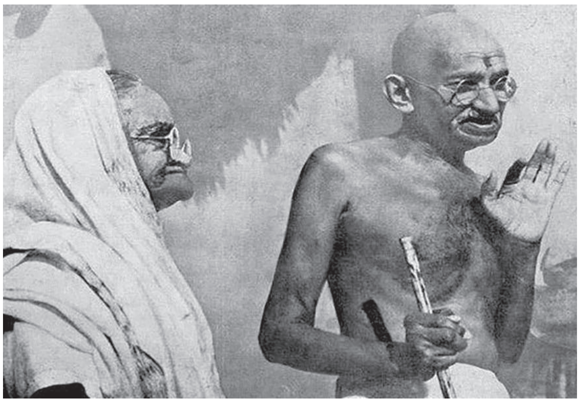

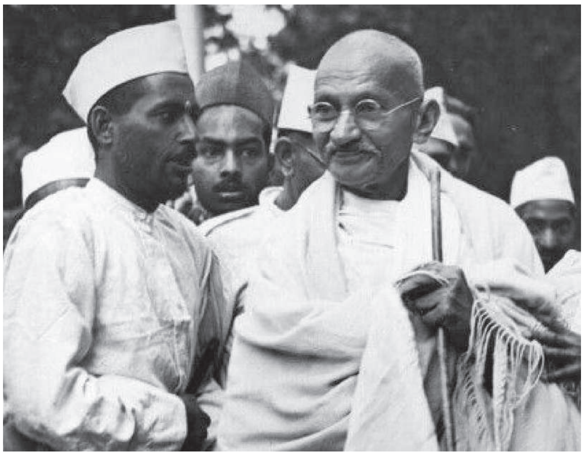

आजादी के आंदोलन में मेहरारू के प्रेरित करे के श्रेय गान्ही जी के बाटे। उनुका अगुवाई में मेहरारू सब आजादी के लड़ाई में एकजूट होके टूट पड़लीस आ शहीद हो अमर हो गइलींन। ऊहां के मेहरारू के कबो अबला ना मनलीं अउर उहां के मेहरारू के नीरीह आ असहाय ना बुझलीं। गान्ही जी वैष्णव संस्कार में पलल-बढ़ल रहन। ऊ लरिकाइयें में अदम्य साहस आ क्रांतिकारी रहलें। उनकर बियाह कस्तूरबा के साथे भइल रहे जे उनका से छव महिना बड़ रहलीं। ऊ पढलो लिखल ना रहलीं, बापू जी उनका के साक्षर क के आपन संघर्षमय जीनगी के संघाती बनवलें। कस्तुरबो, बापू के हर काम में हाथ बटा के सादगीपूर्ण जीनगी बितावत अंतिम सांस जेल में तोड़ देलीनं।

गांधी बाबा आपन औरत के बा कहके गोहरावत रहलें। 'बा' के मतलब गुजराती में माई कहल जाला। ऊ आपन डायरी में लिखले बाड़न कि बा के बिना आपन जीनगी के कल्पना ना कर सकीं। गान्ही जी औरतन के शोषण के विरोधी रहले। ऊ ना चाहत रहलें कि औरत घर के चउखट तक सीमित रहे। उनकर मनसा रहे कि मरद-मेहरारू के स्वाभिमान से जीनगी जीये के समान अधिकार बाटे। बापू खुद बा के लुग्गा फिंचत रहन। एकर मतलब इहे बा कि जीनगी में मेहरारू दाई-लौड़ी आ गुलाम ना, ऊ सहचर आ दोस्त के समान बाडींन। मेहरारूअन के मरजादा के ऊ हमेशा कायम रखलें। ऊ औरत के सत्य, अहिंसा, त्याग अउर ममता के मुरती मानत रहन। गान्ही बाबा के कहनाम रहे कि हमनी के आपन संतान आ सहयोगी के जीनगी के ऊंच पढ़ाई घर में भी देहल जा सकेला। औरतन के शिक्षित कइल हमार सबसे बड़ जिमेवारी बा ताकि आपन देश शक्तिशाली बन सके।

गान्ही जी गावें-गावें जाके लोगन से मिलस आ मेहरारूअन से खुल के बतियावस। जे माई-बाबू से आपन दुख ना सुना सकत रही ऊ बात बापू के सुना-सुना के अपना के धन मानत रहली सन। ऊ आपन बात-व्यवहार से औरत के दिल जीत लेलन। आज के मेहरारू प जवन आधुनिकता के लेप चढ़ल बा, गान्ही जी ओकर विरोधी रहले बाकिर उनकर विरोध संस्कार आ भारतीयता के पक्ष में रहलें।

बापू में एगो खास विशेषता रहे कि ऊ नारी के केवल नारी मानके आपन बात करत रहन। समान रूप से आदमी के लेखा ऊ नारी के मानुस जीवन के एगो महत्वपूर्ण अंग मानत रहलें।

गान्ही जी के कइगो फोटो अइसन बा जे में दुगो बहिन के कान्ही के सहारे चलत देखात बा। मनोवैज्ञानिक एह चित्र के कइगो माने निकललें बाकी कहीं कोइ गान्ही बाबा के चरित प अंगुरी ना उठवलस। नारी शक्ति में बापू के विसवास आपन माई आ मेहरारू के साथे गुजरल जीनगी के अनुभव पर आधारित बाटे काहे से कि ऊ सबके मानवीय दृष्टि से देखत रहन।

(लेखिका अनुराधा कृष्ण रस्तोगी राजनीति के साथ गायन, अभिनय आ विभिन्न पत्र-पत्रिकन में लेखन करत रहीले। इहाँ के करीब बीस साल से ''बा'' के रूप में रहके बापू के संदेश के प्रेषित करे खातिर आ समाज सेवा खातिर 7 पदक आ 28 पुरस्कार मिल चुकल बा।)

रपट
पंडित फूलन पाठक

बापू के सनेस के जन-जन तक पहुंचावे खातिर समर्पित कैमूर के दम्पति

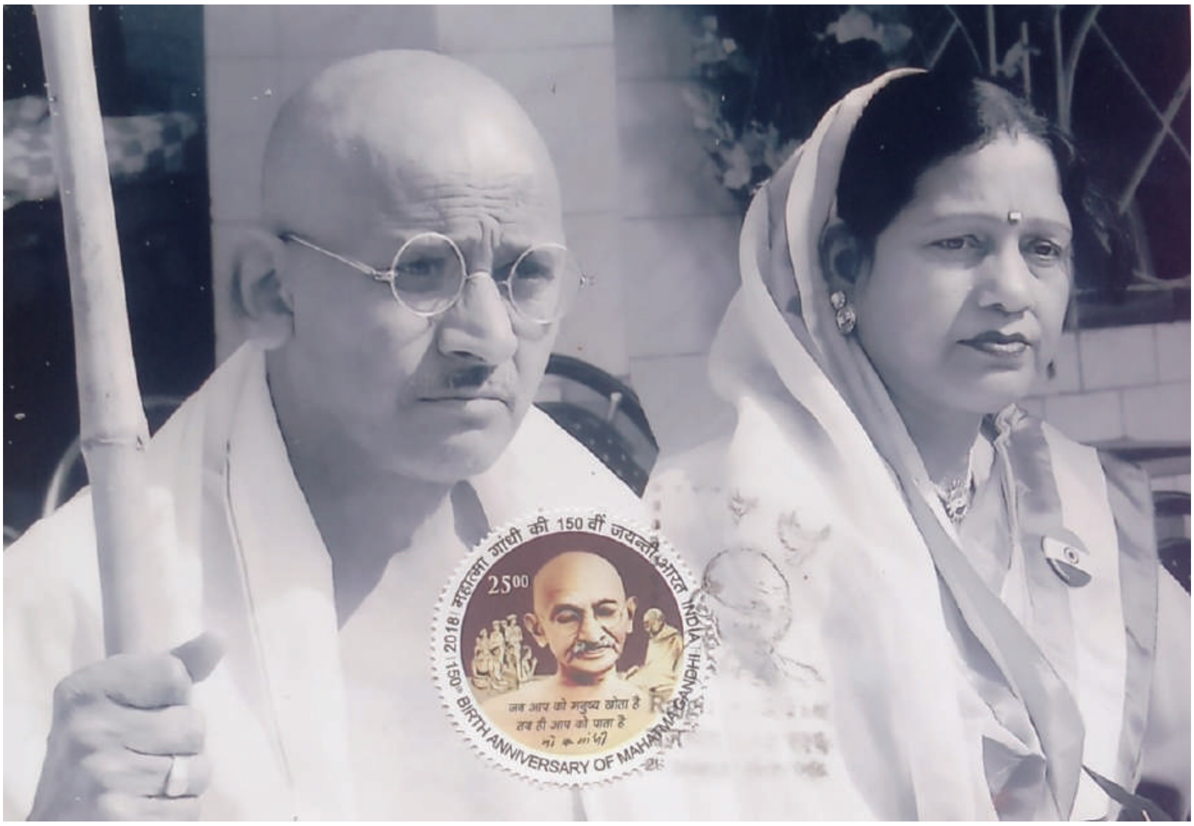

महात्मा गान्ही सम्मान अउर राष्ट्रपति पुरस्कार मिलल कुदरा, कैमूर बिहार के दुनों मरद-मेहरारू सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी आ अनुराधा कृष्ण रस्तोगी करीब दू दशक से सत्य अहिंसा के पुजारी महात्मा गान्ही के आदर्श के जन-जन तक पहुंचावे खातिर गांधी कस्तूरबा के भेस में रह के अमन-चैन भाईचारा प्रेम, सादगी, स्वदेशी, सुख समृद्धि, निरोगी आ सर-सफाई कायम रखे खातिर सक्रिय अउर प्रशंसनीय भूमिका निभवते चलल आ रहल बानी। ई दुनों देश के पहिला मरद-मेहरारू बाड़े जे राष्ट्रीय पर्व 26 जनवरी, 15 अगस्त आ 2 अक्टूबर के बहुते अनूठा अंदाज में मनावेलें। भूखल रहके ध्वज के सलामी देलें। ई दम्पति कोई दोसर व्रत ना करस। बापू के सनेस के प्रति समर्पित ई दुनो बेकत देश दुनिया में कइसे शांति स्थापित होई एकरा खातिर बा-बापू के भेस बनवले संकल्पित बाड़े। गान्ही बनल सुरेन्द्र हाड़ कंपावत जाड़ होखे चाहे खूब देह जरत घाम, लूक, आंधी, तूफान के परवाह ना करके एगो पतील धोती लपेटले आ कस्तुरबा बनल अनुराधा तिरंगा लुग्गा में खूबे भोरे पांच बजे जिला मुख्यालय के प्रभात फेरी में शामिल रहेली।

कैमूर गान्ही नाम से जानल जाये वाला ई रस्तोगी परिवार गान्ही के जीवन्त दरशन से लोग प्रभावित हो बापू के प्रति नतमस्तक हो जालन सभे। 61-65 के उमिर के पड़ाव में इनकर जज्बा कम नइखे भइल। बापू के सनेस देवे खातिर एह दुनो बेकत के बिहार सरकार के डाक विभाग ब्रांड अंबेस्डर के खिताब देले बा। बापूपेक्स (डाक टिकट प्रदर्शनी) के दौरान चंपारण, मोतीहारी, विक्रमशिला, भागलपुर, राजगीर, नालंदा, चंडी, सिलाव, दनियावां, नगरनौसा, कादीरगंज आदि जगहा प गान्ही जी के सनेस भेजे के मकसद से पदयात्रा कइलें।

कैमूर कोकिला के नाम से चर्चित अनुराधा कृष्ण रस्तोगी (बा)

जेकरा के विरांगना सावित्री बाई फुले फेलोशिप अवार्ड मिलल। ऊ घुमे के दौरान नुक्कड़ सभा में बापू के भजन, चरखा गीत अउर गान्ही के जीनगी पर लोकगीत से बापू के सनेस आपन जिनगी में उतारे के निरोहा करेली आ डॉ0 अंबेडकर फेलोशिप विजेता सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी (बापू) साफ-सफाई अभियान के गति धरे खातिर रस्ता भर हाथ में झाड़ू लेहले बहारत चलिले। एकरा साथे डाक विभाग द्वारा आयोजित 'एक्सपो' में गान्हीं दर्शन विषय में बापू कहां-कहां स्थापित बानी जइसे डाक टिकट, लिफाफा, पोस्टकार्ड, अंतरदेशीय, मिनियेचर, कवर, मैक्सिकार्ड, सोना चानी के सिक्का आ टिकट, नोट के साथे हजारो शोध पत्रक आदि प्रदर्शनी द्वारा लोगन में गान्ही बाबा के प्रति जागृति पैदा कर रहल बाड़े। इहां के बाबू जी इंदिरा गांधी ताम पत्र से सम्मानित स्वतंत्रता सेनानी रामनाथ रस्तोगी 'व्याकुल' गान्हींवादी रहलें आ घर में चरखा चलत रहे। सन 1942 के आंदोलन में जयप्रकाश नारायण के साथ उहां के तीन बरिस जेलो में रहनी। एकरे से इहां के प्रेरणा मिलल आ एह क्षेत्र में कूद पड़ली।

सरलता, सरसता, सहजता, तरलता अउर निश्छलता के विचार रखेवाली बहुआयामी प्रतिभा के धनी, कला साधिका अनुराधा कृष्ण रस्तोगी सन 84 से रूढ़िवादी परम्परा तोड़े खातिर पुरजोर लड़ाई में लागल बानी। रेडियो-टी0वी0 के बी-हाई कलाकार बानी इहां के। हरिदास संगीत महाविद्यालय, इलाहाबाद (प्रयाग) से प्रभाकरो कइले बानी। गावे के साथे अभिनयों के क्षेत्र में बानी। इहां के दर्जनों फिलीम आ धारावाहिक में आपन कलाकारी के परचम लहरा चुकल बानी। जेकरा में 'वेस्ट एचीवमेन्ट अवार्ड' भी मिलल बाटे।

'भिखारी ठाकुर सम्मान', 'लता श्री सम्मान', 'मो0 रफी सम्मान', 'सारस्वत सम्मान', 'कला सम्मान', 'संस्कार भारती सम्मान', 'लीला सिन्हा पुरस्कार', 'अपराजिता सम्मान', 'शांति पुरस्कार' अउर 'कैमूर रत्न' के अलावे कोरोना में लोगन के सहायतार्थ कर्मवीर योद्धा सम्मान' के साथे समाज सेवा में सात गो मैडल मिलल बाटे। विंध्यवासिनी देवी, शारदा सिन्हा. तृप्ति शाक्या, भरत शर्मा आ मनोज तिवारी के साथे राष्ट्रीय मंच से आपन मखमली आवाज विखेर चुकल बानी।

टी सीरिज कं. से एक दर्जन कैसेट इनका स्वर में जारी कइले बा, जेकरा में सुपर हिट कैसेट 'निमिया के डारी मइया' आ 'हाथी-हाथी शोर कइले' शामिल बा। कुरीतिके मिटावे खातिर दहेज प्रथा, बाल विवाह के रोके आ बेटी के पढ़ावे, बेटी के बचावे के साथ भ्रूण हत्या खतम करे अउर नशा उन्मूलन के प्रति आपन सुग्घर गीत के माध्यम से साफ सुथरा समाज बनावे के उदेश्य से आपन जिनगी दाव प लगवले बानी। अश्लीलता के खिलाफ सार्थक हस्तक्षेप के प्रति समर्पित बानी इहां के।

बिहार सरकार के लोक स्वास्थ अभियंत्रण विभाग पटना के आलोक में कैमूर जिला के द्वारा 'ले मशाल स्वच्छता के कैसेट जारी भइल बा, एकरा में आठ गो गीत बा, जेकरा के लिखले बानी सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी। एह कैसेट से पूरे बिहार में स्वच्छता अभियान के गति देवे खातिर इहां के 'बिहार गौरव' अउर 'मुंडेश्वरी सम्मान मिलल बा। सन 2015 में 'शान्ति पुरस्कार' आ सन 2016 में 'शांति दूत सम्मान' अउर सन 2018 में महात्मा गान्ही सम्मान' से सुशोभित भइल बाड़े दुनों बेकत। कैमूर के जिलाधिकारी डा0 नवल किशोर चौधरी एह अनुपम जोड़ी सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी के 15 अगस्त 19 में गान्ही के रूप धइले बापू के सनेस पहुचावें खातिर इनका के गान्ही चरखा, खादी बस्तर, लाठी अउर प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित कइले बाड़े आ कैमूर के अनमोल रत्न अनुराधा कृष्ण रस्तोगी के बिहार सरकार के चुनाव आयोग के आलोक में डी एम साहब जिला के निर्वाचन आइकॉन बनवले बाड़े जे ईमानदारी आ शालीनता से वोट देवे बालन लोगन के जागरूक करे में अहम भूमिका निभावे खातिर इनका के निर्वाचन ब्रांड अम्बेसडर के खिताब दे के प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित क के अपना के गौरव अनुभव करत बाड़े। अव तक एह मरद-मेहरारू के 66 गो सम्मान मिलल बाटे। अनुराधा जी जिला परसदो रहली आ जदयू महिला सेल के चेयर मैनों। योग गुरू रामदेव बाबा इहां के भारत स्वाभिमान पातंजलि के महामंत्री बनवले बाड़े। बिहार सरकार के डाक विभाग विक्रम शिला डाक टिकट प्रर्दशनी-2019 में माईस्टाम्प योजना के तहत ई दुनों बेकत प डाक टिकट जारी कइले बा। कैमूर जिला के अइसन बहुमुखी प्रतिभा प गौरव बाटे।

(पंडित फूलन पाठक, अवकाश प्राप्त शिक्षक, समीक्षक, पुरोहिती के साथ लेखन। पटखवलिया, कैमूर में निवास।)

कोरोना कथा

अमित दुबे

कोविड-19 अउरी भोजपुरिया समाज

जो गले मिलोगे तपाक से
कोई हाथ भी न मिलाएगा,
ये नए मिजाज का शहर है,
जरा फासले से मिला करो।

ई शेर लॉक डाउन के बेरा में एकदम सही साबित भइल रहे। अबहियों साबित होते बा। कोविड 19 के बेरा अबे बीतल नइखे। लेकिन लोग अपनी पुरनका आदत पर आ गइल बा। हर जगह भीड़ लउकत बा।

जब अपनी देश मे कोविड 19 के कारण लॉक डाउन लागल, त बहुत बड़ स्तर पर दिल्ली , मुम्बई जइसन मेट्रो शहर से उत्तर प्रदेश आ बिहार की ओर पलायन होखे लागल। लोग 1500 किलोमीटर पैदल चल दिहल। केतना लोग त रस्तवे में मर गइल। ए लोगवा के कोरोना ना मार पावल, लेकिन बदहाली आ गरीबी मार दिहलस।

जब ई लोग अपनी अपनी घरे पहुँचल, त कुछ दिन त अलग रहे के पड़ल, फेर अपनी घर मे रहे लागल। ए परिस्थिति में राशन पानी के भारी कमी भइल। सबसे बड चिन्ता ए बात के हो गइल कि अब आगे के जीवन कइसे चली। ए चिंता में त बहुत लोग आपन जीवन खत्म कर दिहल।

खैर, होखे के त बहुत कुछ भइल। बुद्धिमान लोग त ए घटना से बहुत कुछ सीखल। लेकिन भोजपुरी समाज के उ भाई बंधु जेकरी लगे श्रम बल की अलावा अउरी कौनो कौशल नइखे, परदेश में मजदूरी करता, ठेला खिंच रहल बा, रिक्शा खींच रहल बा, ओकर जीवन आजो भारी रिस्क में बा। अइसन लोग के संख्या लाखों में बा।

अइसन लोग कभी आपन समस्या कौनो मंच पर ना उठा पाई। इतना के बाद भी ई लोग ओहि तरे जोताइल रही।

एकर पहिला कारण ई बा कि लोकतंत्र में हमनी का आपन अधिकार पूरा जानते नइखी जा। जब नेता लोग वोट मांगे आवेला त हमनी का ओकरी काम के हिसाब ना ले के ई देखिलेजा कि आपन बिरादर ह कि ना। जीत जाई त हमार काम करी कि ना? ओसे ओकर मन बढ़त जाला आ उ नेता अउर ओकर पार्टी कभी भी सामाजिक पूंजी बनावे के ना सोचेला। एकर खामियाजा हमनी का त भुगतबे करी ले जा, अगलियो पीढ़ी के भोगे के पड़ेला।

दूसर कारण ई बा कि भोजपुरी प्रदेश में अभी भी कानून व्यवस्था कमजोर बा। एसे उद्योगपति लोग कौनो प्रोजेक्ट लगावे से डेराला। एकरी कारण से रोजगार सृजन होखबे ना करेला।

तीसर कारण ई बा कि ए भोजपुरी समाज मे कुछ शिक्षित लोग बा, उ पढ़ लिख के बाहर भाग जाता। ए घटना के ब्रेन ड्रेन कहल जाला। एसे नवाचार चाहे कौनो इंटरप्राइज के शुरूआत भोजपुरिया क्षेत्र में ना हो पावेला।

रउवा सब से निवेदन बा कि ऊपर लिखल कारण पर ध्यान देब त आगे के टाइम में कौनो रास्ता जरूर निकली। ओकर फायदा हमनी के उ भाई बंधु के भी मिली जे बहुत मजबूरी में मजदूरी करे चल जाता। बाहर जा के ओकर करेजा ई बात ना कही कि

वक्त का ये परिंदा रुका है कहाँ
मैं जो पागल था इसको बुलाता रहा,
चार पैसे कमाने मैं आया शहर
गांव मेरा मुझे याद आता रहा।

(युवा कलमकार अमित दुबे उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा विभाग में अध्यापक पद पर कार्यरत बानी आ हिंदी-भोजपुरी भाषा में सृजन करत रहेनी।)

कोरोना कथा

तारकेश्वर राय 'तारक'

अफवाह के आग से घिरल कोरोना वैक्सीन

कोरोना महामारी के संक्रमण के चलते अदमी के जिंदगी कटाह बन गइल रहल ह आ अबहियो बिपत ओराइल नइखे। जिन्दगी पर उदासी के बदरी घनघोर घेरले बा। अपना देश मे आपन वैक्सीन ईजाद भइला से उमीद के किरण लउकल बा आ बदरी अब गते गते छँटे लागल बिया। भारत अपना बलबुते दुनिया के सबसे बड़हन टीकाकरण अभियान देश के प्रधानमंत्री के हाथे 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे भवन्तु निरामयाः' के महामंत्र के साथे श्री गणेश क के कोरोना के खिलाफ निर्णायक जंग के एलान कई दिहलस। पहिला चरण में करीब 3 करोड़ फ्रंटलाइन हेल्थ वर्कर के ई टीका लागी। हेतना कम समय मे एक ना दू दू गो वैक्सीन कोविशिल्ड (सीरम इंस्टीट्यूट) आ कोवैक्सिन (भारत बायोटेक) ईजाद क के पूरा दुनियां के बता दिहलस की भारत मे बैज्ञानिक प्रतिभा के भी कवनो कमी नइखे। स्वदेशी कम्पनी सीरम इंस्टीट्यूट अउरी भारत बायोटेक कम समय मे ना खाली टीका बनवलस बलकी भारतीय दवा कम्पनीयन के सहयोग से भरपूर मात्रा में उत्पादन क के आपन बल बुता के परिचय दिहलस। अगर अपना देश के वैक्सीन सुरक्षित रहल त आवे वाला समय मे एकर भरपूर मांग होई। महामारी के खत्मा खातिर टीका रामबाण साबित होई। संभावना अपार बा। भारत अपना पड़ोसी देश नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका, थाईलैंड आदि के भी वैक्सीन देवे के तैयारी में बा। अपना देश के पोलियो खसरा टेटनस जइसन14 रोग के बेमारी के टीकाकरण के अनुभव बा, ट्रेंड हेल्थवर्कर के जमात बा, नेटवर्क भी बनावे के नइखे, पहिलहीं से मौजूद बा। ई अनुभव आ नेटवर्क भविष्य में बहुते काम दिही। जवना समर्पण भावना से ई टीकाकरण अभियान के शुरूआत भइल बा निश्चित ही सफल होई आ कोविड महामारी से मुक्ति मिली।

लेकिन कहल जाला ना कवनो काम आसानी से हो जाई त ओकर अहमियत का रही। टीकाकरण अभियान भी अफवाह के लपेटा में आ गइल बा। अफवाह के का लेले बानी, एकर कवनो सिर पैर होला? ना न। ई हर जुग में रहे तनी कम तनी बेसी आजो बा। जब से हमनी के राजनीति अउरी राजनीति करेवाला में दिलचस्पी बढ़ल। नेता के भाग्यविधाता माने लगनी जा तबे से देश में 'अफवाह के हवा' के मार्केटिंग के धंधा अउरी जोर पकड़े लागल। आज अफवाह के लगे हवा बदले के अपार क्षमता बा। कुछ लोग अफवाह फइलावे में एतना ना माहिर होलन कि उनका हुनर के का कहे के। सफेद झूठ भी एकदम साँच लागे लागेला। सोशल मीडिया आ संचार में क्रांति भइला से जंगल के आग नीयन अफवाह फइल जाता। देंखि ना देश मे अफवाह फइलल बा कि 'सरकार जवन कोरोना के वैक्सीन लगवावे शुरू कइले बिया उ ठीक नइखे'। एहू पर राजनीति शुरू हो गइल बा। अफवाह के जोर देखि के सरकार के मुखिया के कहे के परल कि 'वैक्सीन बिल्कुल सुरक्षित बा, ई दवाई ना संजीवनी बूटी नीयन काम करी। अफवाह पर धियान मत दिहीं'।

ई कूल अफवाह के सुन के लोक मन दुविधा में बा। मन त हमेशा दोहरा रणनीति के साथ चलेला। सही वाजिब सलाह के साथे ई खूब भटकइबो करेला। मन के सोझा हमनी नीयन आम आदमी के का बिसात, धनुर्धर अर्जुन भी असहाय हो गइल रहलन। कुरुक्षेत्र के मैदान में कृष्ण जी से उनका कहे के परल 'ए भगवान हमार मन बड़ा चंचल ह, जिद्दी ह, हवा नीयन तेज ह। धइल आ मनावल एके त बड़ा मुश्किल बा। हम का करीं।' ई यक्ष प्रश्न आजो हमनिके आपके सबका सोझा सुरसा नीयन मुँह बवले बा। मन के घोड़ा के बेलगाम मत होखे दिहीं। ज्ञान के लगाम आ बिवेक के चाबुक से एके काबू में राखी। सुनी सभकर लेकिन बहकवला में जिन परी। अंध भक्ति में आँख रहते आन्हर जिन बनी। करीं उहे जवना में राउर भलाई होखे, राउर परिवार के भलाई होखे। जिन्दगी राउर ह। स्वविवेक ठंढा दिमाग से निर्णय रउवा लिहीं कि टीका लगवावे के चाही की ना?

(लेखक तारकेश्वर राय तारक जी त्रैमासिक भोजपुरी ई-पत्रिका सिरिजन के उपसम्पादक अउरी गाँव गिरांव आ माटी से जुड़े खातिर उत्सुक कलमकार हईं।)

अजय कुमार पाण्डेय

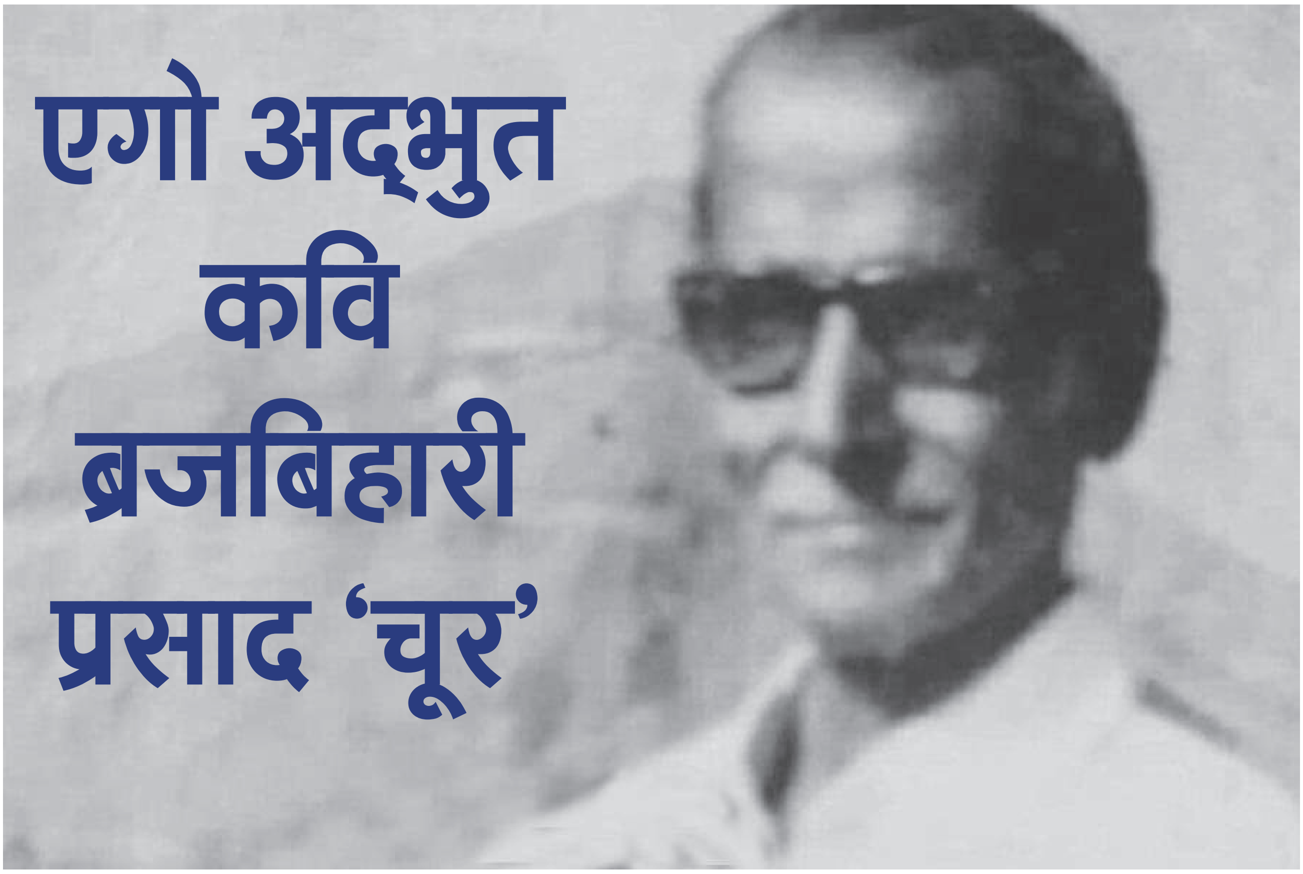

एगो अद्भुत कवि ब्रजबिहारी प्रसाद 'चूर'

एके गो कविता से अमर हो जाए वाला कुछ कवि आ साहित्यकार लोगन के चर्चा कइल जाए त चंपारण के स्व. ब्रजबिहारी प्रसाद 'चूर' के नाम सबसे पहिले दिमाग में आवेला।

'चूर' जी के जीवन अपना आप में एगो कहानी बा, जेकरा के इयाद कइला पर ताज्जुब होला कि का एहू तरे साहित्य साधना हो सकेला ?

पश्चिमी चम्पारण के नौतन प्रखंड के बथना गांव में स्व. मुंशी हजारी प्रसाद लाल के घरे 23 जनवरी 1914 के इहाँ के जनम भइल। साधारण निम्न मध्यमवर्गीय किसान के घर पैदा भइला पर उहों के घरे थरिया बाजल होई, बाकी हमरा बुझाला, मन से ना बाजल होई। 'चूर' कवि जी के लइकाई से ले के बुढापा तक खाली दुखे पीछा करत रहल।

मुश्किल से प्राइमरी तक के शिक्षा प्राप्त क पवनी आ पता ना कौन अइसन दुःख पड़ल कि युवावस्था में हीं घर-दुआर के त्याग के रामनगर चल अइनी। बाकी के सारा जीवन रामनगर में हीं अपना सखा स्व. केदार लाल जी के साथे आ उनकरे घरे रह के बिता देहनी। बहुत कमे लोग जाने ला कि 'चूर' कवि जी आ केदार जी संघतिया ह लोग, बाकी सभे इहे बुझे कि केदार जी के बड़ भाई हउए 'चूर' कवि जी। केदार जी के घर में जेठ-सरदार लेखा जब तक उहाँ के जियनी, रहनी, सभे घर के गार्जियन लेखा उहाँ के आदर-मान देवे में कौनो कबो कमी ना कइलस।

कवि 'चूर', रामनगर के पहिला अखबार विक्रेता रनी।
ओ समय, आर्यावर्त, प्रदीप, इंडियन नेशन (अंग्रेजी), सर्चलाइट (अंग्रेजी) आ एगो उर्दू अखबार आवे। उहाँ का अपना पुरान साईकिल प रोज अखबार ध के घर-घर बटबो करीं आ सब कर दुख-सुख में भागीदारियो करीं।

रामनगर बजार में दुनु जने के एगो साईकिल रिपेयरिंग के दुकान रहे। 'चूर जी' बढ़िया जिल्दसाज रनी आ साँप-बिछु के काटे के दवा भी करीं। अखबारन के साथे पत्रिका भी आवे, जेमे से हमनी का बाल-पत्रिका 'पराग' किने जाईं जा। सम्भवतः 75 पैसा में मिले 'पराग'। चार आना में अखबार मिले।

जब हम 'चूर' जी के दोकान पर जाईं, त, कबो-कबो उहाँ के पुरान अखबार के किनारे के खाली जगह पर कगजही पेंसिल से कविता लिखत देखीं। लईका रनी, ओतना ना बुझाए, बाकी आज ताज्जुब होला कि रद्दी अखबार के हाशिया पर कविता लिखे वाला आ घर-घर घूम के अखबार बेचे वाला कवि कइसे एगो कालजयी कविता के रचना क दिहलस।

कवि 'चूर' के रचल 'चम्पारण के लोग हँसेला' जन-जन के कविता बन गइल बा। शायद हीं केहू भोजपुरिया होई जे ई कविता ना पढ़ले-सुनले होई। का हिंदुस्तान, मारिशस, फिजी, सूरीनाम, नेपाल, मयनमार, थाईलैंड, बांग्लादेश आदि उ तमाम मुल्कन में, जहां भोजपुरी भाषी लोग बा, ई कविता गावल आ पढ़ल जाला।

एक-दु बरिस पहिले बगहा के कवि आ वरिष्ठ साहित्यकार श्री अखिलेश्वर नाथ त्रिपाठी जी से 'चम्पारण के लोग हँसेला', अमेरिका से मांग भइल त उहाँ के ई कविता खोज के अमेरिका भेजनी।

रामनगर में कवि गोष्ठीयन के बड़ा समृद्ध परम्परा रहे। प्रत्येक महीना केहू ना केहू के घर पर मासिक कवि गोष्ठी के आयोजन होखे।

'चूर जी' के चीनी मिल मालिकन पर कटाक्ष करत कविता, 'निलहा गइल त मिलहा आइल', आ 'गनपत जी रउआ के गोड़ हम लागेनी', उहाँ के बड़ी लोकप्रिय कविता रहे। लेकिन सम्भवतः 1954 में प्रकाशित 'चंपारण के लोग हँसेला' उहाँ के कालजयी रचना बन गइल।

कवि 'चूर जी' के पूरा जीवन दुःख के समंदर जइसन रहे, जेकरा धारा से लड़त-लड़त सन 1996 में उहाँ के खुद कविता बन गइनी।

चूर जी के कालजयी रचना- चंपारण के लोग हँसेला

चंपारण के लोग हँसेला
उत्तर ओर सोमेसर खड़ा,
दखिन गंडक जल के धारा।
पूरब बागमती के जानी,
पश्चिम में त्रिवेणी जी बानी।
माघ मास लागेला मेला,
चंपारण के लोग हँसेला ।।

त्रिवेणी के नामी जंगल,
जहँवा बाघ करेला दंगल।
बड़का दिन के छुट्टी होला,
बड़-बड़ हाकिम लोग जुटेला।
केतना गोली रोज छुटेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

नदी किनारे सुन्दर बगहां,
मालन के ना लागे पगहा।
परल इन्हा संउसे बा रेत,
चरके माल भरेलें पेट।
रेल के सिलपट इहाँ बनेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

इहाँ मसान नदी बउरहिया,
ऊपर डुगरे रेल के पहिया।
भादो में जब इ फुफुआले,
एकर बरनन करल ना जाले।
बड़का-बड़का पेड़ दहेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

इहे रहे विराट के नगरी,
जहँवा पांडव कइलें नौकरी।
अर्जुन इहंवे कइलें लीला,
इहंवे बा विराट के टीला।
बरनन वेद-पुराण करेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

परल इंहवा पानी के टान,
अर्जुन मरलें सींक के बाण।
सींक बाण धरती में गइल,
सिकरहना नदी बह गइल।
जेकर जल हर घड़ी बहेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

रामनगर राजा नेपाली,
माँगन कबो ना लौटे खाली।
इहाँ हिमालय के छाया बा,
इहाँ अजबे कुछ माया बा

एही नदी में स्वर्ण दहेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

रामनगर के धनहर खेती,
एकहन खेत रोहू के पेटी।
चार महीना लोग कमाला,
आठ महीना बइठल खाला।
दाना बिना केहू ना मरेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

इहाँ जाईं चानकी पर चढ़,
देखीं लौरिया में नंदनगढ़।
केहू कहे भीम के लाठी,
गाड़ल बा पत्थर के जाथी।
लोग अशोक के लाट कहेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

नरकटियागंज देखीं गाला,
मंगर शनिचर हाट के हाला।
लेलीं बासमती के चाउर,
अन्न इहाँ ना मिली बाउर।
भात बने बटुला गमकेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

आगे बढीं चलीं अब बेतिया,
बीच राह में बा चनपटिया।
इहाँ मिले मरचा के चिउरा,
किन-किन लोग भरेला दउरा।
गाड़ी-गाड़ी धान बिकेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

बेतिया राजा के राजधानी,
रहलें भूप करन अस दानी।
पच्छिम उदयपुर बेंतवानी,
बढ़िया सरेयाँ मन के पानी।
दूर-दूर के लोग पियेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

बेतिया के मीना मशहूर,
गिरजाघर भूकंप में चूर।
बाड़े अबतक बाग हजारी,
मेला लागे दशहरा के भारी।

हाथी घोडा बैल बिकेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

आलू डगरा बस बेतिया के,
भेली सराहीं जोगिया के।
गुड़ चीनी के मात करेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

बेतिया के दक्षिण कुछ दूर,
बथना गाँव बसल मशहूर।
इहाँ बा लाला लोग के बस्ती,
धंधा नौकरी और गिरहस्ती।
एमे केतना लोग बसेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

चंपारण के गढ़ मोतिहारी,
भइल नाम दुनिया में भारी।
पहिले इहे जिला जागल,
गोरन का मुँह करिखा लागल।
नीलहा अब तक नाम जपेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

गाँधीजी जब भारत अइलें,
पहिले इंहवा सत्याग्रह कइलें।
लीलहा देखी भाग पराइल,
तब से ना चंपारण आइल।
मोतिहारी के नाम जपेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

इहंवे बसल सुगौली भाई,
गोरे-गोरखे भइल लड़ाई।
हारे पर जब भइलें गोरा,
धर दिहलें गोली के बोरा।
भइल सुलह इतिहास कहेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

कँवरथिया के देखीं राबा,
अरे राज बउरहवा बाबा।
नामी अरेराज के मेला,
आके दरशन लोग करेला।
फगुनी तेरस नीर चढ़ेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

छपरा जिला गोरखपुर बस्ती,
जेकर इहाँ होत परवस्ती।
केहू नोकरी केहू नाच करेला,
माँगन लोग दिन-रात रहेला।
केतना लोटा झाल बजेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

खाए में जब खटपट भइलें,
भाग के तब चंपारण अइलें।
माँगी-चाँगी के धन-धान कमइलें,
माँगन से बाबू बन गइलें।
अइसन केतना लोग बसेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

सब दिन खइलें सतुआ लिट्टी,
इहाँ परल देहिया पर पेटी।
बाप के दुःख भूल गइलें बेटा,
भोर परल माटी के मेटा।
अब त लाख पर दिया जरेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

का करिहें कवि लोग बड़ाई,
जग चंपारण के गुण गाई।
आपन कमाई अपने खाला,
केहू से ना मांगे जाला।
ई देख दुश्मन ठठुरेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

रहलें उ कविचूर के साथी,
इहंवे के भईया देहाती।
कविता बा उ देहिया नइखे,
गगरी भरल खिंचाते नइखे।
रटना अबहीं लोग करेला,
चंपारण के लोग हँसेला।।

(अजय कुमार पांडेय, रामनगर (पश्चिमी चंपारण), सम्प्रति-सहायक, सिविल कोर्ट, बगहा (प.चम्पारण), वर्तमान निवास- राप्ती नगर, गोरखपुर।

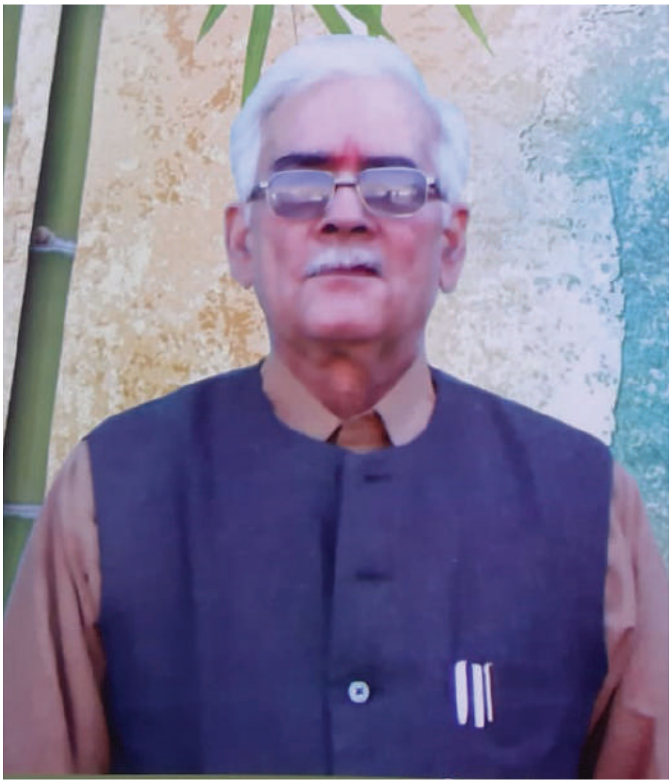

आध्यात्म आ प्रगतिशील चेतना के समन्वित शख्सियत : प्रो. ब्रजकिशोर

लगभग दू साल पहिले माने 2 जनवरी, 2019 के प्रो. ब्रजकिशोर हमनी के बीच ना रहनी। उन्नासी साल के उमिर में पटना के एगो बड़ अस्पताल में भोर के 4 बजे उ आखिरी सांस लेले रहनी।

प्रो. ब्रजकिशोर ओइसे त यांत्रिक अभियंत्रन के सेवानिवृत्त प्राध्यापक रहनी आ उहां के इंजीनिरिंग के विद्यार्थियन खातिर हिंदी-अंग्रेजी में कई गो जरूरी पाठय पुस्तक लिखले रहनीं, बाकिर उहां के असली पहिचान-प्रतिष्ठा भोजपुरी के नामी कथाकार आउर संपादक के रूप में रहे। समकालीन भोजपुरी कहानी के विकास-जतरा में जवना चोटी के कथाकारन के खास अवदान रहल बा ओह में प्रो. ब्रजकिशोर के नाम खास तौर से रेघरिआवे जोग बा। चार दशक पहिले उहां के कहानी-संग्रह 'धुआं' प्रकाशित होके चर्चा का केंद्र में रहल, जवना के कहानी सामाजिक विसंगतियन-विद्रूपता के उकेरे में काफी हद ले कामयाब रहली स। भोजपुरी कहानी के उपजाऊ जमीन तैयार करे का गरज से उहाँ का 80 के दशक में लमहर समय ले कथा केन्द्रित यादगार पत्रिका 'भोजपुरी कथा कहानी' के संपादन कइले रहनीं। भोजपुरी के श्रेष्ठ कहानियन के 'सेसर कहानी भोजपुरी के' शीर्षक से संकलित संपादित करके उहां के इतिहास रचले रहनीं, जवना में आचार्य शिवपूजन सहाय के 'कुंदन सिंह केसरबाई', रामेश्वर सिंह काश्यप के 'मछरी' समेत एकावन गो प्रतिनिधि कथाकारन के चुनिंदा कहानी मौजूद बाड़ी स।

ब्रजकिशोर जी के पहचान प्रगतिशील चेतना के प्रतिष्ठित कथाकार के रूप में रहल बा आ 'धुआं' के बाद उहाँ के चऊदह गो कहानियन के संग्रह 'एक टुकी अन्हरिया' शीर्षक से प्रकाशित भइल रहे, जवना में संघर्षशील जिनिगी उबड़-खाबड़,बाकिर विश्वसनीय जथारथ के मरम छुवे वाला चित्र उकेरल गइल रहलन स।

जब बेरी-बेरी इ सवाल उठावल जाए लागल कि आम आदमी के सामाजिक सरोकार-जद्दोजहद के जुझारू कहानियन के सिरिजना के बावजूद सामाजिक बदलाव आउर आस-बिस्वास के कवनो किरिन फुटत लऊकत काहे नइखे त प्रो. ब्रजकिशोर एकरा मूल ओजह के पड़ताल करत लिखले रहनी - 'कथाकार का चारु ओर जवन जिनिगी आ वातावरण के बस्तर लपेटाइल बा, ओमें ऊ बड़ा तकलीफ महसूस करता। आदमी का मन में मानवीय मूल्यन के मोल घटत चल जाता, काहेकि ओकर पूरा व्यक्तित्व राजनीति का जांता

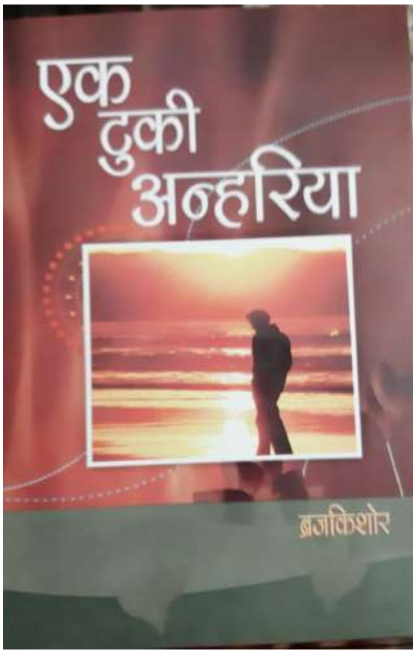

में पिसा के चूर हो रहा बा। हर ओर व्यापल अव्यवस्था का ओजह से बिखराव के प्रवृत्ति बढ़ल चल जाता। कतहीं बिस्वास आ असरा के फूल गमकत नइखे लऊकत। गरीबी, घुटन आ तनाव से आदमी के दम धुआं रहल बा- ना त साफ धनकते बा आ ना बुताते बा।

एगो बदलाव के स्थिति आ मनः स्थिति जे बा ऊ सुनुगता। ओद लकड़ी जब सुनुगेला, त धुआं के अम्बार लागिये जाला। समाज आ व्यक्ति- दूनो घुटन से आ टूटन से भीतरे भीतर धुआं रहल बा। चाहे जवन वर्ग होखे- गरीब, धनिक, मजूर-सभत्तर एगो अइसने बेचैनी बा, आकुलता आ धुंध बा। अतना कूहा छवले बा कि राह नइखे सूझत। समूचा समाज आ राष्ट्र एह धुआं भरल वातावरण में घुट रहल बा। एह घुटन आ बदलाव का तड़प के चिन्हासी-भर महसूस करे का व्यग्रता में सनाइल लेखक के मन एही धुआं के भोग रहल बा। पूरा सामाजिक राजनीतिक चेतना के ई धुआं छापि लेले बा, जवना के ओजह से ना संघर्ष के जुझारू तैयारी होता आ ना बदलाव के स्वागते

हालांकि प्रो. ब्रजकिशोर जी मूलतः कथाकार रहनीं, बाकिर उहाँ के एगो संवेदनशील कवियो रहनीं आ जवना घरी उहाँ के दरजा छह के विधार्थी रहनीं, तबे 'योगी' (पटना) में छपल उन्हुका कविता पर बाबा नागार्जुन आ संपादक ब्रजशंकर वर्मा उन्हुकर पीठ ठोकले रहलन। आगा चलिके जब ऊ लोकभाषा भोजपुरी का प्रति समर्पित हो गइलन, त उन्हुकर समकालीन भोजपुरी कविता संग्रह 'जोत कुहासा के' खासा लोकप्रिय भइल रहे। दोसरको संग्रह 'बूंद भर सावन' में संवेदना के तरलता साफ-साफ देखल-महसूसल जा सकेला। साल 2018 में छपल अपना संक्षिप्त आत्मकथा 'बाँस तर का घर' में उहां के अपना जिनिगी के जद्दोजहद के बानगी पेश कइले बानीं। ओह में उहां के खुलासा कइले बानीं कि जनम के बाद बहुत दिन ले उहां के बानी मौन रहे आ एगो दुर्घटना में आगी के लपट का चपेट में अइला के दौरान चीख के रूप में ऊ मुखरित भइले रहे। आध्यात्म उहाँ के विरासत में मिलल रहे आ अपना गाँव में उहाँ के दुनिया राम बाबा के आलीशान मंदिर बनववले रहनी। देवराहा बाबा के उहां के परम शिष्य रहनी आ बाबा के चमत्कार पर कई गो किताब लिखले रहनी। आध्यात्मिक पत्रिका ' योगीराज' के संपादनो उहां के लमहर समय ले कइले रहनी। एह तरी, अध्यात्म आ प्रगतिशील चेतना के समन्वित व्यक्तित्व रहे प्रो. ब्रजकिशोर के।

हमरा नियन अकिंचन के पिछिला चालीस साल से उहां के आत्मिय नेह-छोह मिलत आवत रहे। जब हम पहिला हाली पटना अइली, त सबसे पहिले दूगो साहित्यकारन से भेंट कइले रहलीं। एगो रहलन 'प्रगतिशील समाज' के संपादक प्रो. श्याम नंदन शास्त्री 'हंसराज', जे हमरा हिन्दी लघुकथन पर केंद्रित पत्रिका के विशेषांक निकालि के, फेरू अपना संदीप प्रकाशन से ' भविष्य का वर्तमान 'शीर्षक से हमार लघुकथा संग्रह छपले रहलन। दोसरका अग्रज रहलन प्रो.ब्रजकिशोर, जे 'भोजपुरी कथा-कहानी में हमार सोगहग उपन्यास' दरद के डहर

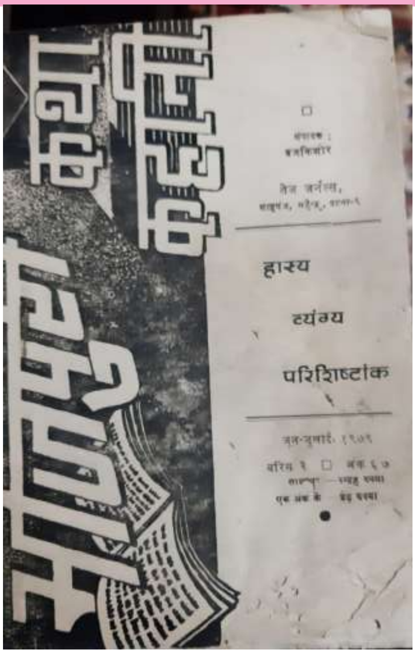

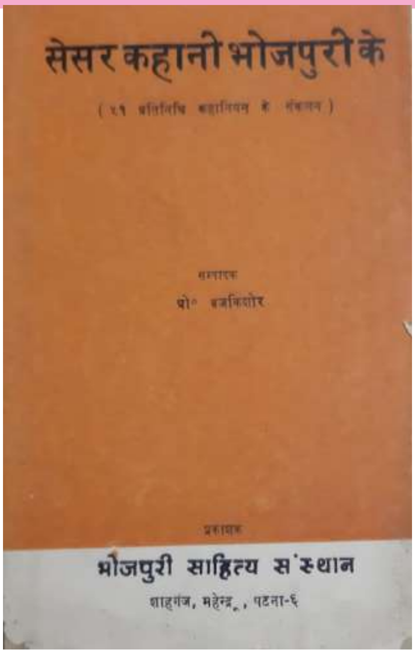

'छपला के बाद भोजपुरी साहित्य संस्थान से ओकर पुस्तकाकार प्रकाशन कइले। प्रयोगधर्मिता त उहां में कूटि-कूटि के भरल रहे। जवना घरी भोजपुरी में लघुकथा विधा जोर पकड़ल शुरू कइले रहे, उहां के हमरा संगे विमर्श कइनीं कि काहें ना भोजपुरी के गिनल-चुनल एक दर्जन कथाकारन के पांच दर्जन लघुकथा चुनिके, हरेक लघुकथाकार पर मूल्यांकनपरक टिप्पणी का साथे एगो संकलन में छापत जाऊ? हमनीं दूनों के संपादकत्व मे ऊ किताब 'टुकी-टुकी जिनगी' शीर्षक से प्रकाशित भइल रहे जेकर लोकार्पण करत रेणुकूट अधिवेशन में डा. विद्यानिवास मिश्र जी भूरि-भूरि तारीफ कइले रहनीं। ओकरा बाद जाके 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के लघुकथा विशेषांक निकाले के योजना बनल रहे। उहें के प्रेरणा से उत्साहित होके स्व. पशुपति नाथ सिंह भोजपुरी आंदोलन के धार तेज करे खातिर 'भोजपुरी कलम' के शुरूआत कइले रहलन।

सन 1970 में जब अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल त आचार्य पाण्डेय कपिल, भैरवनाथ पाण्डेय वगैरह का संगे प्रो. ब्रजकिशोर जी के रचनात्मक भूमिका रहें। उहां के लमहर समय ले महामंत्री रहनीं आ आगा चलिके अध्यक्षो के दायित्व सम्हरनीं। सन 2001 में जब पाण्डेय कपिलजी सम्मेलन के कार्यालय उहां के आवास इन्द्रपुरी से हटा के कतहीं अउर ले जाए के निहोरा कइनीं, त प्रो. ब्रजकिशोर जी आपन आवास में कार्यालय राखे के अनुग्रह कइले रहनीं। उहां के 2001 से 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के अपना आखिरी सांस ले ना खाली स्तरीय संपादन कइनीं, बलुक कबीर, गोरख पाण्डेय, भोजपुरी के सइगो विभूतियन, राजकुमार शुक्ल, भोजपुरी सिनेमा वगैरह सर्वाधिक जरूरी विषयन पर यादगार विशेषांको प्रकाशित कइले रहनीं। ताजिनिगी उहां के कुछ ना कुछ नया,

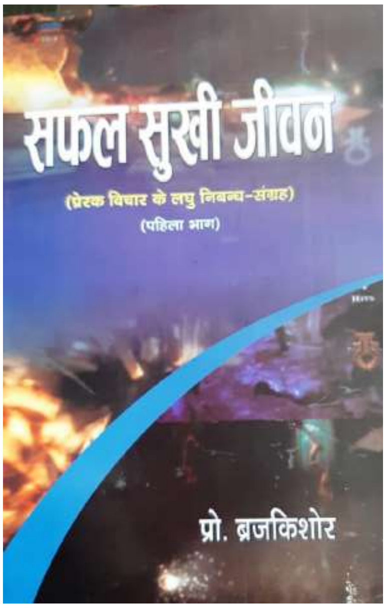

बेहतर आ रचनात्मक करेके सोच राखल रहनीं। जिनिगी में कईगो झंझावातो अइलन स, बाकिर सभकर सामना करत उहां के आपन नजरिया हरदम सकारात्मक बनवले रखनीं।

प्रो. ब्रजकिशोर जी के साहित्यिक विरासत के 'खोंता से बिछुड़ल पंक्षी' के लेखिका उहाँ के अर्धांगिनी रूपश्रीजी, प्रकाशन पेशा से जुड़ल इंजीनियर पुत्र रंजन आ 'मन' के कवियित्री बेटी दीप्ति ओह रचनाशीलता के विरासत के सहेजि-सम्हारिके रखले बा लोग। जदी उहाँ के ईयाद पर केंद्रित स्मृति-ग्रंथ के प्रकाशन होखे आ उहाँ के सिरिजनशीलता पर अगर मूल्यांकनपरक किताब छपे, त ई उहाँ के प्रति साँच आउर सार्थक सरधांजलि होई हमार प्रणामाजंलि।'

(शताधिक पुस्तकें के प्रणेता, उत्कृष्ट बालसाहित्य सर्जना खातिर 'बालसाहित्य भारती' सम्मान प्राप्त लेखक भगवती प्रसाद द्विवेदी हिंदी भोजपुरी के नामचीन कथाकार, कवि, समालोचक आ लोकसाहित्य के अध्येता हईं।)

डा. पुष्कर

गँवई संस्कृति के पोषक जनकवि कैलाश गौतम

'भक्ति के रंग में रँगल गाँव देखा,
धरम में, करम में, सनल गाँव देखा।
अगल में, बगल में सगल गाँव देखा,
अमौसा नहाये चलल गाँव देखा।' (अमौसा के मेला)

पंक्ति सुनते भा याद आवते कैलाश गौतम जी के चेहरा आ उ भाव नजरी के सोझा दउरे लागेला। चाहे 'अमौसा के मेला ' होखे भा 'गुलबिया के चिठ्ठी ' चाहे 'बड़की भौजी, 'कचहरी न जाना', 'गाँव गया था गाँव से भागा', चाहे 'पप्पू की दुल्हन' कैलाश गौतम जी के हर कविता में लोक के प्रति संवेदना, मनःस्थिति के मनमोहक चित्रण, गाँवन के मिट्टी के खुशबू आ मिठास भरपूर मिलेला। अइसन नइखे कि कवि के दृष्टि ओह सामाजिक व्यवस्था प नइखे गइल जेकर आज जरूरत बा। 'कचहरी न जाना' व्यंगात्मक कविता में त खुलेआम गौतम जी दहाड़त बानी-

‘कचहरी की महिमा निराली है बेटे
कचहरी वकीलों की थाली है बेटे
पुलिस के लिए छोटी साली है बेटे
यहाँ पैरवी अब दलाली है बेटे

कचहरी ही गुंडों की खेती है बेटे
यही जिन्दगी उनको देती है बेटे
खुले आम कातिल यहाँ घूमते हैं
सिपाही दरोगा चरण चूमतें है।’

गागर में सागर भरे वाला क्षमता, मन के अपना सरसता, सहजता से भावविभोर क देवे वाला हिंदी आ ओह भाषा में भोजपुरी आंचलिकता के पिरोवे वाला जनप्रिय आधुनिक कवि कैलाश गौतम जी के जन्म 8 जनवरी 1944 में डिग्घी गाँव, जिला- चंदौली (उत्तर प्रदेश) में भइल रहे। कैलाश गौतम जी छात्र जीवन से ही साहित्यानुरागी रहीं। एम.ए., बी.एड. के डिग्री लेला के बाद अध्यापक बने के चाह बनारस से इलाहाबाद ले आइल। बाकिर बने के कुछ अउर लिखल रहे। कैलाश जी आल इंडिया रेडियो के आकाशवाणी इलाहाबाद केंद्र प कंपेयरर के पद प आसीन हो गइनी आ आजीवन आकाशवाणी से ही जुड़ल रहनी। आकाशवाणी के दायित्व से मुक्त होते कैलाश गौतम जी हिंदुस्तान अकादमी के अध्यक्ष पद प मनोनीत हो गइनी।

कैलाश गौतम जी के रचनात्मकता आ रागात्मकता खातिर बड़-बड़ पुरस्कारन से सम्मानित भी कइल गइल। उत्तर प्रदेश सरकार के सर्वोच्च सम्मान यश भारती सम्मान, प्रसिद्ध ऋतुराज सम्मान आ परिवार सम्मान त मिलबे कइल, सबसे बड़ जवन सम्मान मिलल कि जनता इहाँ के दिल में बसा लेलस। जइसे भोजपुरी के शेक्सपियर भिखारी ठाकुर के मानल जाला, ओइसे जनकवि कैलाश गौतम जी भी ओही रूप में पाठक आ श्रोता लोगन के हृदय में जगह बनवले बानी। गौतम जी के भाषा में पूर्वी उत्तर प्रदेश के टोन, बनारसी बोली आ भोजपुरी के जवन मिठास पढ़े, सुने आ देखे के मिलेला ऊ अद्वितीय बा। बदलत गाँव गौतम जी के रास ना आइल, जवन कवि 'अमौसा के मेला' में गँवई संस्कृति से भरल पूरल, भौतिक आ आधुनिक सुविधा से अलग बिल्कुल गंगाजल लेखा शुद्ध जीवन, सरलता आ सहजता, ईमानदारी, परस्पर सौहार्द्र आ सामूहिक सोच के बखान कइनी, उहे कवि के वेदना साफ झलकल बा कविता ' गाँव गया था, गाँव से भागा' में-

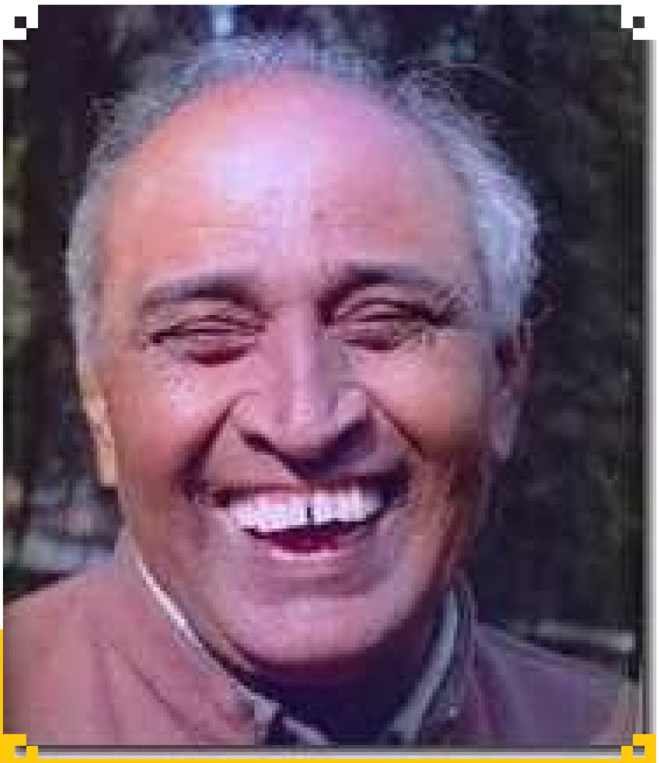

‘गाँव गया था,
गाँव से भागा,
रामराज का हाल देखकर,
पंचायत की चाल देखकर,
आँगन में दीवाल देखकर,
सिर पर आती डाल देखकर,
नदी का पानी लाल देखकर,
और आँख में बाल देखकर,
गाँव गया था,
गाँव से भागा।’

ए से गांव के गांवे रहे दियाव त भारत के संस्कृति आ सभ्यता अक्षुण बनल रही। अइसन मत करीं जा कि गाँवन के नया आ आधुनिक बनावे के चक्कर में गाँव के नामों निशान ही गायब हो जाये। काहे कि जब ले गांव बा तबे ले खेती बा, गाँवन के चलते ही भारत कृषि प्रधान राष्ट्र कहात आवता। गाँव में ही माटी के असली संस्कृति देखे के मिलेला। कवि कैलाश गौतम जी इहे चाहत रहीं कि गाँवन के विकास आ ओकर संप्रभुता तबे अखंडित रही, जब हमनी के एगो गांव के बुनियादी संस्कृति के संरक्षित रखत ओकर विकास करीं जा। जवन गाँव से खरिहान गायब हो गइल, दालान उजड़ गइल, किसान भाई के पहचान बदल गइल, मेहमान बोझ बन गइलन, घिघियात आदमी बा, अहरा, पोखरा भरा गइल, कुँआ के रेहट गायब हो गइल ओह गाँव में कवि के बेचैन मन कइसे रमी-

‘गाँव गया था,
गाँव से भागा।
जला हुआ खलिहान देखकर,
नेता का दालान देखकर,
मुस्काता शैतान देखकर,
घिघियाता इंसान देखकर,
कहीं नहीं ईमान देखकर,
बोझ हुआ मेहमान देखकर,
गाँव गया था,
गाँव से भागा।’

गौतम जी के कविता में किसान खातिर संवेदना साफ लउकेला। जइसे हल्कू खातिर प्रेमचंद जी के। इहाँ के पात्र रोअत नइखे, ऊ ओह समस्या के अपना भितरे पी जाता। केहू के एहसास नइखे होत। गौतम जी बड़ी बारिकी से ओह समस्या के 'अमौसा के मेला ' में लिखत बानी-

‘नुमाइश में जा के बदल गइली भउजी,
भईया से आगे निकल गइली भउजी,
आयल हिंडोला मचल गइली भउजी,
देखते डरामा उछल गइली भउजी ।
भईया बेचारु जोड़त हउवें खरचा,
भुलइले ना भूले पकौड़ी के मरीचा,
बिहाने कचहरी कचहरी के चिंता,
बहिनिया के गौना मशहरी के चिंता ।

फटल हउवे कुरता टूटल हउवे जूता,
खलीका में खाली किराया के बूता,
तबो पीछे पीछे चलल जात हउवें,
गदोरी में सुरती मलत जात हउवें।’

9 दिसंबर, 2006 के ऊ मनहूस दिन रहे, जब हिंदी आ भोजपुरी साहित्य के एह जनकवि के देहावसान भइल। ओकरा पहिले ‘सीली माचिस की तीलियाँ’ (कविता संग्रह), ‘जोड़ा ताल’(कविता संग्रह), ‘तीन चौथाई अंश’ (भोजपुरी कविता संग्रह), 'सिर पर आग '(गीत संग्रह) प्रमुख रूप से प्रकाशित हो चुकल रहे आ ‘तंबुओं का शहर’ (उपन्यास), ‘आदिम राग’ (गीत-संग्रह), ‘बिना कान का आदमी’ (दोहा संकलन) अउर ‘चिन्ता नए जूते की’ (निबंध-संग्रह) जइसन कृति भी जल्दिये पाठक लोगन के संवेदित करी। अइसन जनवादी सोच आ ग्रामीण संस्कृति के साहित्य में पिरोवे वाला कवि बिरले पैदा होलें आ जब होलें त एगो इतिहास रच देवे लें। श्रोता, पाठक के जेहन में जवन पैठ कैलाश गौतम जी के बा ऊ सभके ना मिल सके। आपन सोंच के कैलाश गौतम जी जवन कविता में धार देनी ओकरा के हम नमन करत बानी।

निष्कर्षतः कैलाश गौतम जी आपन रचनन में लोकभाषा, लोकविश्वास, लोक संस्कृति के पुरहर जगह देनी आ मिथक, अन्धविश्वास, अव्यवस्था प प्रहार भी कइनी। इहाँ के अधिकांश रचना में ग्रामीण जीवन के अंतरात्मा बसेला,जवना में ग्रामीण जीवन के यथार्थ रूपन के साक्षात दर्शन होला। कैलाश गौतम जी नइखीं, लेकिन उहाँ के रचना ओतने प्रासंगिक बा।

कवि आपन रचनन में जवन गांव, खेत, बधार, मेला, खरिहान, गँवई विचार के स्थापित कइलन, आज दुख के बात इहे बा कि साहित्य आ संस्कृति से उ गांव आ किसान दूर होत जात बाड़न। ओह निधि के बचावे के जरूरत बा तबे कैलाश गौतम जी के प्रति हमनी के आंतरिक संवेदना आ श्रद्धांजलि मुखरित होई।

(डा. पुष्कर, हिंदी आ भोजपुरी के युवा आलोचक आ रचनाकार बानी। आरा (बिहार) से शिक्षा ग्रहण कइला के बाद सम्प्रति शिक्षा निदेशालय, दिल्ली में कार्यरत बानी।)

भोजपुरी के गौरव

ज्योत्स्ना प्रसाद

अपना देश के माटी के रंग जब केहू पर चढ़ेला त ऊ आपन रंग दिखावेला आ खूंखार डाकू भी ब्रह्मदेव के समान हो जाला- ''उल्टा नाम जपत जग जाना, वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना'' एतना ही ना जब ओकर आशीर्वाद मिलेला त महामूर्ख भी महाज्ञानी बन 'मेघदूतम' जइसन श्रेष्ठ कृति के रचइता बन जाला। अस्सी बरिस के उमिर में भी जवानी हिलोर मारे लागेला आ ऊ वीर कुँवर सिंह बनके दुश्मन के नाको चना चबवा देला। एही परंपरा के अगिला कड़ी रहले भिखारी ठाकुर, जेकरा लगे स्कूल-कॉलेज के कवनों डिग्री ना रहे आ ऊ भोजपुरी के शेक्सपियर कहाये लगले।

भिखारी ठाकुर

लोक जागरण के संदेश वाहक

''नौ बरस के जब हम भइलीं, विद्या पढ़न पाट पर गइलीं
वर्ष एक तक जबदल मती, लिखे ना आइल राम गती
मन में विद्या तनिक न भावत, कुछ दिन फिरलीं गाय चरावत''

भिखारी ठाकुर के विद्या आरम्भ भइल उनका नौ बरीस के भइला पर। बाकिर उनकर पढ़ाई में मन ना लागल। कहल जाला कि पूत के पाँव पालने से ही बुझाये लागेला। बाकिर जीवन के असली आनन्द त लीक से हट के चले में ही आवेला। भेड़ नाहिंन पक्तिबद्ध होके सिर झुकवले एक के पीछे एक के चलला में भला कवन आनन्द बा? एही से त प्रकृति अपना एह नियम के समय-समय पर तोड़े ले भी। ऊ भी मातृभूमि के आशीर्वाद से। अपना देश के माटी के आशीर्वाद जेकरा मिल जाला ऊ धन्य हो जाला' अपना देश के माटी के चमत्कार के त कहहीं के का बा? एह माटी के रंग में जे रंगा गइल समझी ओकर त जिन्दगी बदल गइल। एह माटी के रंग जब केहू पर चढ़ेला त ऊ आपन रंग दिखावेला आ खूंखार डाकू भी ब्रह्मदेव के समान हो जाला-''उल्टा नाम जपत जग जाना, वाल्मीकि भये ब्रह्म समाना'' एतना ही ना जब ओकर आशीर्वाद मिलेला त महामूर्ख भी महाज्ञानी बन 'मेघदूतम' जइसन श्रेष्ठ कृति के रचइता बन जाला। अस्सी बरिस के उमिर में भी जवानी हिलोर मारे लागेला आ ऊ वीर कुँवर सिंह बनके दुश्मन के नाको चना चबवा देला। एही परंपरा के अगिला कड़ी रहले भिखारी ठाकुर जेकरा लगे स्कूल-कॉलेज के कवनों डिग्री ना रहे आ ऊ भोजपुरी के शेक्सपियर कहाये लगले। काहे कि कवनों भी स्कूल-कॉलेज के पढ़ाई आदमी के डिग्री त दे देला, बाकिर विवेक-बुद्धि आ समझदारी में विस्तार खातिर अभी ले कवनों संस्था नइखे खुलल। कारण ई त हमनी के अंदर अपने आप विकसित होला हमनी के आन्तरिक ज्ञान आ जीवन के अनुभव से। अगर अइसन ना रहित त एगो गणित के शिक्षक अपना गणित के ज्ञान के परिचय देत अपना छात्रन के लम्बाई के औसत निकाल नदी के पानी में भला काहे डूबा दित?-'लेखा-जोखा थाहे लइका डूबले काहे?'

भिखारी ठाकुर नाई जाति के रहले। उनकर बचपन भी एक सामान्य नाई के बच्चा नाहिंन ही बीतल। कहीं अइसन कुछ चमत्कारी उनकर व्यक्तित्व ना रहे जे उनका के सामान्य से विशेष बनावत होखे। गाँव के अपना दोस्त-साथियन नाहिंन पढ़ाई से परहेज आ गाय चरावत घूमत फिरले।

जवना घर मे खर्ची के तंगी रहेला ओह घर में लड़ाई-झगड़ा बहुत होला। एही लड़ाई-झगड़ा आ भूखमरी से अपना आ अपना परिवार के बचावे खातिर बिहार से सैकड़न बरिसन से पलायन जारी बा। आजो गाड़ी में भर-भर के लोग बिहार से दोसरा-दोसरा राज्यन में जाला। ई लोग कहीं गिरमिटिया कहाइल, कहीं अप्रवासी भारतीय। कई बार त अपनही देश में ओह लोगन के अपना से ओछा समझत ''भैया लोग'' कहल जाला। बिहारियन के ई दुरगती एह से होला काहे कि आज भी गाँवन में किसानी के अलावे दोसर कवनों कामे नइखे जवना से ओह लोगन के नगदी आमदनी हो सके। एह नगदी के पावे खातिर भिखारी ठाकुर के बहरा जाए के पड़ल।

हमनी में जे भी अपना गाँव से जुड़ल बा, एह शहरी चकाचौंध के दुनिया से दूर अपना इहाँ के पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था के देखले बा, ऊ एह बात के ठीक-ठीक समझ सकेला कि अपना इहाँ के सामाजिक व्यवस्था में नाई के का काम ह? चाहे ओकर ओह समाज में का स्थान होला? नाई अपना समाज के अभिन्न अंग ह। काहेकि ओकरा बिना कवनो सामाजिक काम संपन्न ना होला। जनेव-मुंड़न, शादी-विआह में ही ना बल्कि मरला-जियला में भी पण्डित जी लोग के बाद सबसे पहिले उहे नेवताला। ई बात अलग बा कि दूनू लोगन के सम्मान में अंतर रहेला। बाकिर एकरा साथे इहो बात साँच ह कि पण्डित जी लोग त जगे-परोजन में विशेष रूप से पुछाला, बाकिर नाई लोगन के त समाज में रोजे के आना-जाना लागल रहेला। कभी केश कटावे, हजामत बनावे खातिर त कभी अपना हितयी-नतयी में कवनों शुभ-अशुभ के नेवता पेठावे खातिर।

भिखारी ठाकुर भी प्रारम्भ में अपना जीविका खातिर आपन पैतृक पेशा ही अपनवलें। ओह घड़ी सैलून के प्रचलन त रहे ना, एह से उनका अपना काम के सिलसिला में रोजे घर-घर जाये के पड़त होई। एह तरह से उनका घर-घर के कहानी से नित्य दो-चार होखे के पड़त होई। एही तरह से अपना गाँव-जवार से जुड़ल समस्या उनका दिल-दिमाग में आवत गइल होई आ अपना सुसुप्ता अवस्था में उनका दिल-दिमाग के कवनो कोना में आपन जगह बनावे लागल होई।

बिहार के धरती शस्य-श्यामला ह बाकिर ओकरा पर एतना लोगन के पेट भरे के बोझ बा कि ऊ स्वयं त्राहिमाम-त्राहिमाम करत रहेले। बिहार के जनता के सारा बोझ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीका से खेती पर ही बा। आजादी के पहिले से ही एह बोझ के कम करे के कभी कोई ठोस उपाय ना सरकार के ओर से भइल ना कोई गैर सरकारी संस्था के ओर से ही। एकर परिणाम ई भइल कि अर्थशास्त्र के अनुसार जवना के 'छिपी बेरोजगारी' कहल जाला ओकर शिकार हमेशा से बिहार रहल बा। जवना घर मे खर्ची के तंगी रहेला ओह घर में लड़ाई-झगड़ा बहुत होला। एही लड़ाई-झगड़ा आ भूखमरी से अपना आ अपना परिवार के बचावे खातिर बिहार से सैकड़न बरिसन से पलायन जारी बा। आजो गाड़ी में भर-भर के लोग बिहार से दोसरा-दोसरा राज्यन में जाला। ई लोग कहीं गिरमिटिया कहाइल, कहीं अप्रवासी भारतीय। कई बार त अपनही देश में ओह लोगन के अपना से ओछा समझत 'भैया लोग' कहल जाला। बिहारियन के ई दुरगती एह से होला काहे कि आज भी गाँवन में किसानी के अलावे दोसर कवनों कामे नइखे जवना से ओह लोगन के नगदी आमदनी हो सके। एह नगदी के पावे खातिर बिहार में पलायन के अलावे कोई दोसर उपाय भी नइखे। काहे कि एकरा पर गंभीरता से कभी सोचल ना गइल आऊर कुछ ना त खेती के साथे मुर्गी-पालन, मछली-पालन आ गौशाला के ही व्यवस्था हो गइल रहित त बिहारियन के मुम्बई जाके ठेला पर साग-भाजी बेचे के जरूरत ना परित आ ना ही अपना घर-परिवार से एतना दूर जाके रिक्शा चलावे के चाहे अपार्टमेंट-अपार्टमेंट के चौकीदारी ही करे के पड़ित।

भिखारी ठाकुर के भी एह समस्या से जूझे के पड़ल रहे बाकिर एही बीच उनका साथे एगो अच्छा घटना ई भइल कि जब ऊ कुछ कमाये-धमाये लगलन त उनका पढ़ाई में रुचि बढ़े लागल-

**''जब कुछ लगलीं माथ कमाये, तब लागल विद्या मन भाये।
माथ कमाई नेवती चिट्ठी, विद्या में लागल रहे डीठी।
बनिया गुरु नाम भगवाना, उहे ककहरा साथ पढ़ाना।''**

भिखारी ठाकुर के पाण्डुलिपि कैथी लिपि में लिखल मिलल बा। वइसे उनकर शिक्षा-दीक्षा त कुछ खास भइल ना रहे। ऊ रामायण भी टो-टो के ही पढ़त रहले। ऊ जबले अपना गाँव में रहले अपना उमीर के गाँव के दोसरा नाऊ नाहिन गाय चरावत, चिट्ठी-पतरी पेठावत, लोगन के हजामत बनावत आपन समय काट लेहले। बाकिर आपन एतना देह धूनला के बाद भी उनका का मिलल? एह से अपना गाँव-जवार के दोसर नवजवान नाहिंन उहो ज्यादा कमाये आ परिवार के कलह से बचे खातिर अपना जातीय पेशा के बल पर बंगाल के खड़गपुर भाग अइले।

''अल्पकाल में लिखे लगलीं, तेकरा बाद खड़गपुर भगलीं''

तीस के उमिर में भिखारी ठाकुर के जीवन में एक नया मोड़ आइल। उनका मन में रामचरित मानस के प्रति जहाँ एक ओर श्रद्धा उपजल उहई दोसरा ओर समाज के कुरीति के प्रति सजगता भी बढ़ल। देश के कोना-कोना में पहिले से ही समाज-सुधार के बयार बहे लागल रहे। राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचंद विद्यासागर जइसन लोग अपना-अपना सुधार के क्षेत्र में अलख जगा चुकल रहे। ओकर प्रभाव देश व्यापी भइल भी रहे। भिखारी ठाकुर भी ओह प्रभाव के अपना पर पड़े से रोक ना पइले। ऊ बंगाल गइल त रहले कमाये बाकिर उहाँ से रामलीला के गुण सीख के वापस अपना गाँवे आ गइले।

बंगाल अइला के बाद ही भिखारी ठाकुर के जीवन में परिवर्तन आइल। ऊ बंगाल के मेदनीपुर जिला में रामलीला देखे गइले। ओह रामलीला के उनका जीवन पर एतना प्रभाव पड़ल कि ऊ रामचरित मानस के अध्ययन आ चिंतन-मनन खातिर बेचैन हो गइले। भले ही ऊ टो-टो के ओकरा के बाँचत होखस। बाकिर उनका लगे ओह भावना के समझे के मौलिक शक्ति रहे। -

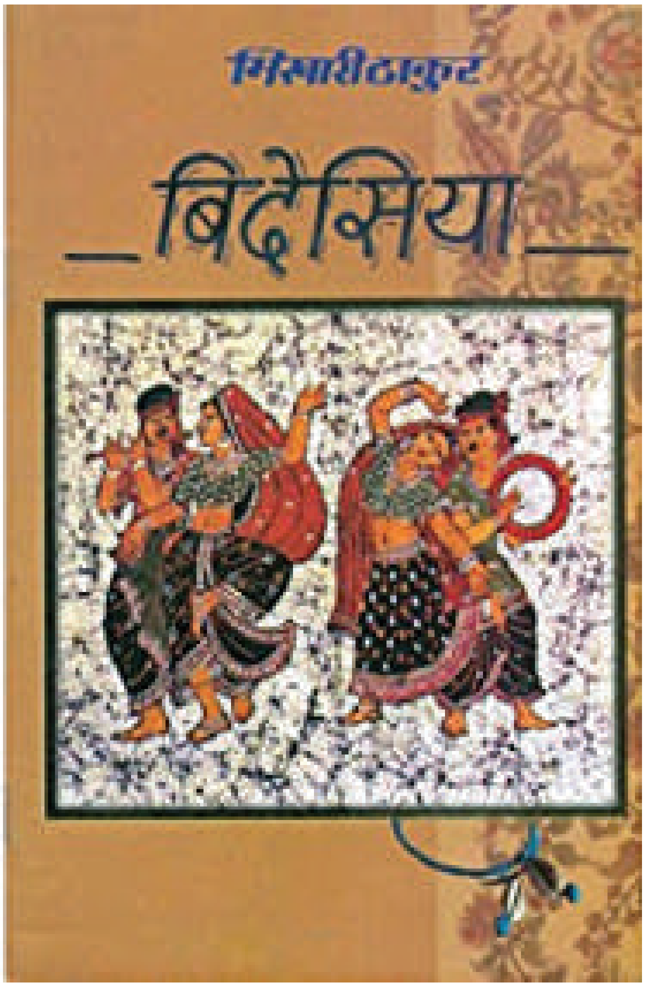

''गइलीं मेदनीपुर के जिला, ओही जे कुछ देखलीं रामलीला।
ठाकुर दुअरा उहाँ से गइलीं, चनन तालाब समुद्र नहइलीं।
दर्शन करि डेरा पर आई, खोलि पोथी देखलीं चौपाई।
फुलवारी में जगह बुझाइल, तुलसीकृत में मन लपटाइल।''

इहई से भिखारी ठाकुर के जीवन में एक नया मोड़ आइल। ओह घड़ी ले उनकर उमिर तीस के लपेट में आ गइल रहे। उनका मन में रामचरित मानस के प्रति जहाँ एक ओर श्रद्धा उपजल उहई दोसरा ओर समाज के कुरीति के प्रति सजगता भी बढ़ल। बंगाल त कवनों भगवान शंकर के त्रिशूल पर अवस्थित रहे ना जेकरा के कवनों परेशानी छू ना सकत रहे। एह से समाज के उहे कुरीति ओहू जा व्याप्त रहे जे भिखारी ठाकुर के गाँव में रहे। अंतर बस इहे रहे कि बंगाल में ओकर स्वरूप बदल गइल रहे।

देश के कोना-कोना में पहिले से ही समाज-सुधार के बयार बहे लागल रहे। राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचंद विद्यासागर जइसन लोग अपना-अपना सुधार के क्षेत्र में अलख जगा चुकल रहे। ओकर प्रभाव देश व्यापी भइल भी रहे। भिखारी ठाकुर भी ओह प्रभाव के अपना पर पड़े से रोक ना पइले। ऊ बंगाल गइल त रहले कमाये बाकिर उहाँ से रामलीला के गुण सीख के वापस अपना गाँवे आ गइले। अपना गाँवे वापस अइला के बाद ऊ आपन पुश्तैनी काम छोड़ लगले रामलीला करे। फेर आपन नाच-मंडली बनवले आ अपना घर-परिवार से छिपा के लागल नाच के साटा लिखाये।

भिखारी ठाकुर जे बीजरूप में अपना समाज के दुर्दशा के छवि अपना दिल-दिमाग में सँजो के रखले रहले, ऊ बंगाल के बयार लागते अंकुरित होखे लागल रहे। देखते-देखते ऊ अब एगो सघन पेड़ में परिवर्तित भी होखे लागत। एह से ऊ अपना ओही सब भाव के कला में पिरो के अपना आजीविका के साधन बनवले त दूसरा ओर समाज सुधार के हथियार भी। कहल जाला कि ऊ बिना पईसा के कहीं भी अपना नाच-मंडली के ले ना जात रहले। ऊ एह बात के स्वीकारत कहऽतारन-

भिखारी ठाकुर के रामलीला से लोकप्रियता धीरे-धीरे बढ़े लागल, जवना चलते इलाका के लोग उनका के जाने-पहचाने लागल। एकरा बाद समाज में व्याप्त कुरीति के प्रति जे आक्रोश उनका दिल-दिमाग में रहे, ऊ ओकरा के नाटक के रूप में जनता के सामने परोसे लगले, जेकरा के दर्शक बहुत पसंद कइलें। उनका 10 नाटकन के एक संपादक-मण्डल द्वारा 'भिखारी ठाकुर ग्रंथावली खण्ड 1-2' के रूप में संपादित कइल गइल बा।

''नाच-मण्डली के धरि साया, लेक्कर दिहीं जै कहि रघुनाथा।
राम शब्द जय जब तब कहिके, सभा खुश करीं नाच में रहिके।
एह पापी के कवन पुन्न से, भइल चहुँ दिसि नाम।
भजन भाव के हाल न जनलीं, सबसे ठगलीं दाम।''

भिखारी ठाकुर के रामलीला से लोकप्रियता धीरे-धीरे बढ़े लागल, जवना चलते इलाका के लोग उनका के जाने-पहचाने लागल। एकरा बाद समाज में व्याप्त कुरीति के प्रति जे आक्रोश उनका दिल-दिमाग में रहे, ऊ ओकरा के नाटक के रूप में जनता के सामने परोसे लगले, जेकरा के दर्शक बहुत पसंद कइलें। उनका 10 नाटकन के एक संपादक-मण्डल द्वारा ''भिखारी ठाकुर ग्रंथावली खण्ड 1-2'' के रूप में संपादित कइल गइल बा।

भिखारी ठाकुर के सबसे पहिला रचना ह ''बिरहा बहार''। ई गीत-संवाद शैली में बा। इहे उनकर पहिला नाटक रहे आ गीत पुस्तक भी। बाद में ''नवीन बिरहा'' के नाम से एगो दोसर किताब निकलल। इनकर अन्य गीत पुस्तकन के नाम बा- भिखारी हरिकीर्तन, नाई-बहार, श्रीनाथ रत्न, रामनाममाला, भिखारी शंका समाधान, जयहिनू खबर, नर नव अवतार इत्यादि। एकरा अलावें उनकर कुछ स्फुट रचना बा जेकर अभी प्रकाशन बाकी बा।

भिखारी ठाकुर के गीतन के विषय के दृष्टि से मोटा-मोटी तीन भागन में बाँटल जा सकेला, जवना में-

1. एक भाग समर्पित बा हिन्दू-समाज में स्थापित देवी-देवता यथा- राम, कृष्ण, शिव, गंगा आदि के। एकरे साथे ओमे स्थानीय देवता-पितर के स्तुतियो बा।
2. दूसरा भाग समर्पित बा समाज-सुधार, प्रकृति-प्रकोप आ हिन्दू-मुस्लिम एकता पर।
3. तीसरा भाग समर्पित बा श्रृंगार रस पर, जवना में श्रृंगार के दूनू पक्ष- संयोग आ वियोग पक्ष के रचना बा बाकिर एह में वियोग पक्ष के गीतन में ही भिखारी ठाकुर के अधिक सफलता मिलल बा।

भिखारी ठाकुर के कुल 28-29 पुस्तकन के प्रणेता बतावल जाला, जवना में इनका प्रसिद्धि के राज छुपल बा। इनका प्रसिद्धि में सबसे बड़ा योगदान इनका नाटकन के ही रहे। जवना के ई लेखन आ निर्देशन ही ना करत रहले बल्कि अपना नाच-मण्डली के साथे ओकरा मंचन में भी आपन सहयोग देत रहले। ई बहुआयामी प्रतिभा के धनी रहले। ई एक ही साथे एगो सफल लोक कलाकार, कवि, गीतकार, नाटककार, रचनाकार, निर्देशक ही ना रहले बल्कि कुशल संयोजक भी रहले। इनका नाचमण्डली में बहुत अनुशासन रहे। ई कभी भी तत्काल लोकप्रियता के ललक में अश्लील प्रस्तुति देके अपना नाच-मण्डली के स्तर गिरवले ना।

इनका नाटकन के विषय प्रायः सामाजिक आ पारिवारिक बा। काहे कि ई अपना नाटक के माध्यम से समाज में घटित घटना आ समस्या के ही उठवले बाड़न। काहे कि इनका में समाहित कलाकार जानत रहे ''नाच कांच हऽ बात साँच हऽ''। इनकर सबसे लोकप्रिय नाटक ह ''विदेसिया'', जेकर कथा अइसन बा कि बिहार के हर गाँव के लोग से आपन निजता के सम्बन्ध जोड़ लेला। सभे के लागेला कि एह नाटक में उनके गाँव के बात कहल बा। एह नाटक के कथा जीविका खातिर गाँव से पलायन के बा। कथा-नायक के गवना कराके अपना कनिया के देहात में छोड़ कलकत्ता कमाये जाये के मजबूरी बा। उहाँ के शहरी चकाचौंध में चौंधिआइल ओकरा मन के शहर के एक औरत के फंदा में फँसला से आपन जिनगी तबाह क लेबे के बात बा। फिर बटोही के समझवला पर अपना घरे वापस आवे के कथा बा। एह नाटक के अंत सुखांत भइल बा।

''पियवा निसइल'' में गाँव में गृह-उद्योग के अभाव, बाढ़-सूखा के मार झेलत किसान, खेती के वैज्ञानिक संसाधन के कमी, समुचित शिक्षा के अभाव में नैतिक आचरण से क्षीण होत लोग अपना जीविका खातिर दोसर-दोसर नगर-महानगर में पलायन करता आ उहाँ नशाखोरी के ओर प्रवृत हो जाता, जवना के परिणति ई होता कि ओकरा आचरण में अन्य कई दोष भी शामिल हो जाता, जवना के चलते परिवार बर्बाद हो जाता।

''बेटी बेचवा'' में अपना गरीबी के चलते तिलक ना जुटला के कारण अपना बेटी के दादा के उमिर के आदमी के साथे बिआह

भिखारी ठाकुर कभी भी तत्काल लोकप्रियता के ललक में अश्लील प्रस्तुति देके अपना नाच-मण्डली के स्तर गिरवले ना। इनका नाटकन के विषय प्रायः सामाजिक आ पारिवारिक बा। काहे कि ई अपना नाटक के माध्यम से समाज में घटित घटना आ समस्या के ही उठवले बाड़न।

के नाम पर बेच देहला के लाचारी बा। एकरा के कुछ लोग बेमेल बिआह के नाम देहले बा बाकिर एक बेमेल बिआह में हमेशा कनिए छोट रहेले कभी भी वर ना। हमरा नजर से अभी ले मात्र एके गो उपन्यास गुजरल बा जे उर्दू के ह। ई उपन्यास राजिन्दर सिंह बेदी के ''एक चादर मैली-सी'' ह, जवना में देवर से समाज के लोगन के दबाव पर बड़ भाई के विधवा पर चादर डलवा देहल जाता।

समाज के सोच देखीं कि ओह चादर के ''मैली-सी'' कहल जाता। ई प्रचलन खाली बिहारे में ना रहे आ ना ही सिर्फ भिखारी ठाकुर ही एकरा के उठवले बाड़न बल्कि दोसरा-दोसरा भाषा के कई रचनाकार भी अपना रचना के माध्यम से ई मुद्दा उठवले बा। बंगाल के ही कथाशिल्पी शरत चंद चट्टोपाध्याय अपना उपन्यासन में औरतन के मुद्दा उठवले बाड़े। उनकर बहुचर्चित उपन्यास 'देवदास' में भी त पार्वती के बिआह तीन गो बच्चा के बाप से करावल जाता। ऊ का बेटी बेचवा के ही रूप ना ह? मुट्ठीभर अपवाद के छोड़ दीं त पूरा भारत के किस्सा इहे रहे। आजो कभी-कभी कवनों ना कवनों रूप में अइसन घटना देखे-सुने के मिल जाला।

''गबरघिचोर/ घिचोर बहार'' नाटक में बेटा पर माई, बाप आ प्रेमी के अधिकार पर सवाल उठावल बा। ई नाटक इनकर अन्तिम आ सबसे प्रौढ़ नाटक मानल जाला। एह नाटक में नायिका अपना कोख पर अपना अधिकार के बात करतिया। एह नाटक में स्त्री वर्ग के पुरुष वर्ग के समक्ष खड़ा कइल गइल बा, जवना से आवे वाला पीढ़ी खातिर भिखारी ठाकुर मार्ग प्रशस्त्र कइले बाड़न। एह दृष्टिकोण से ई नाटक ''विदेसिया'' से बहुत आगे निकल गइल बा। हालाँकि लोकप्रियता के दृष्टि से ''विदेसिया'' नाटक ही भिखारी ठाकुर खातिर मिल के पत्थर साबित भइल। जबकि कई समीक्षक इनका के एह नाटक के चलते जर्मन के प्रसिद्ध कवि, नाटककार, नाट्य निर्देशक आ ''बर्लिन एन्सेंबल नाट्य-मंडली'' के मालिक बर्तोल्ट ब्रेष्ट के समकक्ष खड़ा क देले बा आ इनका एह नाटक के ''कॉकेशियन चाक सर्किल'' के बराबर बतवले बा। वास्तव में एह दूनू रचना में विस्मयकारी समानता ही एह दूनू व्यक्ति के एके धरातल पर ला के खड़ा कर देले बा। जबकि दूनू के कथा भिन्न बा। एकरा अलावें भी भिखारी ठाकुर के कई अन्य नाटक बा, जइसे ''गंगा स्नान'' जवना में ढोंगी साधु से ठगाइल बा। ''पुत्र-वध'' में गहना के लालच में बेटा के हत्या के जिक्र बा। ''विधवा-विलाप में

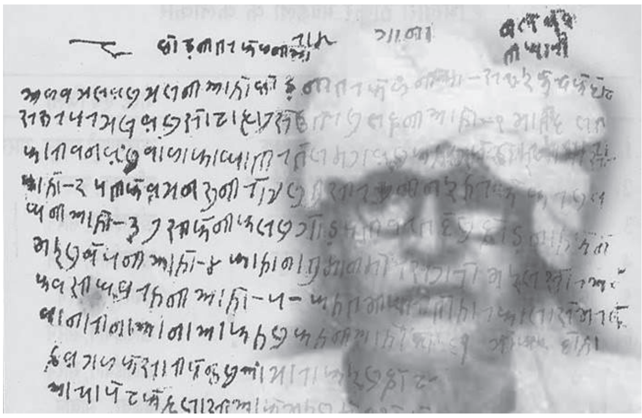

धन खातिर विधवा के मारे के मनसा बा त'' भाई-विरोध में कुटनी के बात लहरवला से संयुक्त परिवार के टूटन के जिक्र बा।

लोक-कलावंत भिखारी ठाकुर के मातृभाषा भोजपुरी रहे आ ऊ एही के अपना काव्य आ नाटक के भाषा बनवलन। ऊ अपना साहित्य के माध्यम से लोक-जागरण के संदेश वाहक ही ना बनले बल्कि नारी आ दलित विमर्श के उद्घोषक भी बनले। एह से ऊ जहाँ एक ओर अपना नाटकन में नारी के समस्या उठावत रहले, उहई दोसरा ओर उनका नाच-मण्डली में सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगन के तरजीह देहल जात रहे। जइसे-यादव, बिंद, लोहार, नाई, कहार, मनसुर, गोंड, दुसाध, पासी, भाँट इत्यादि जाति के लोगन के। एकर दूगो कारण रहे। पहिला ई कि ई नाच-पद्धति एही लोगन के उपज रहे आ दूसरा कि बहुसंख्यक होके भी जे लोग समाज के हासिया पर रहे ओकरा जीविको पार्जन के साधन जुटावल। भिखारी ठाकुर के नाच में स्त्री पात्र के अभिनय पुरुष पात्र द्वारा स्त्री के साज-श्रृंगार में कइल जात रहे। जवना के ''लौंडा'' कहल जात रहे, जेकरा के समाज में हेय दृष्टि से देखल जाला। फिर भी मनोरंजन के एह विधा के ही ऊ अपना जीविकोपार्जन आ सृजनात्मक अभिव्यक्ति खातिर चुनले। ऊ अपना एह नाच-मण्डली के माध्यम से ही लोकप्रिय भी भइले।

भिखारी ठाकुर नाटक के शुरूआत त कइले रामलीला से बाकिर बहुत जल्दी ही रामलीला छोड़ आपन नाच-मण्डली बना लेहले। ऊ अपना नाटकन में गोंड, नेटुआ, धोबी के नाच के नकल भी करत रहलें। उनका जिंदगी में ही उनकर नाम चारो ओर फइल

लोक-कलावंत भिखारी ठाकुर के मातृभाषा भोजपुरी रहे आ ऊ एही के अपना काव्य आ नाटक के भाषा बनवलन। ऊ अपना साहित्य के माध्यम से लोक-जागरण के संदेश वाहक ही ना बनले बल्कि नारी आ दलित विमर्श के उद्घोषक भी बनले। एह से ऊ जहाँ एक ओर अपना नाटकन में नारी के समस्या उठावत रहले, उहई दोसरा ओर उनका नाच-मण्डली में सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगन के तरजीह देहल जात रहे।

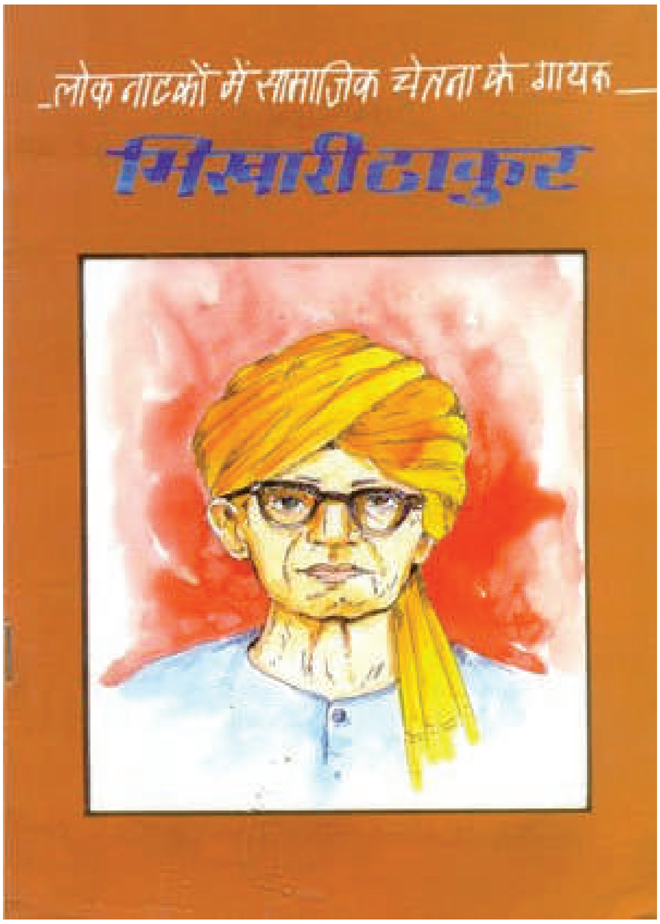

गइल रहे। उनका प्रदर्शन में टिकिट लागत रहे। बावजूद एकरा उनका कार्यक्रम में एतना भीड़ उमड़े कि पुलिस के इंतजाम करे के पड़े। एतना ही ना भोजपुरी के ई अमर कलाकार अपना मण्डली के साथे सिर्फ बंगाल, आसाम में ही ना गइले बल्कि देश से बाहर मॉरीशस, केन्या, सिंगापुर, युगांडा, म्यांमार, नेपाल, मैडागास्कर, दक्षिण अफ्रीका, फिजी, त्रिनिडाड आदि जगह पर भी गइले जहाँ कम या ज्यादा भोजपुरी संस्कृति रहे।

भिखारी ठाकुर के ब्रिटिश शासन में रायबहादुर के खिताब देहल गइल त बिहार सरकार का ओर से ताम्र-पत्र से सम्मानित कइल गइल। इनकर ''विदेसिया'' एतना मशहूर हो गइल बा कि आज भिखारी ठाकुर आ ऊ एक-दूसरा के पर्याय बन गइल बा। ''विदेसिया'' पर फिल्म भी बनल बा जवना में इनका छोटा-मोटा भूमिका भी मिलल रहे बाकिर ओह फिल्म में कहानी बदला गइल रहे।

पं० राहुल सांकृत्यायन उनका के भोजपुरी के शेक्सपियर आ अनगढ़ हीरा कहले बाड़न। सचहूँ अल्प शिक्षा प्राप्त करके ऊ अपना समय से एतना आगे रहले त अगर उनका समुचित शिक्षा मिलल रहित त ऊ का करते? जगदीशचन्द्र माथुर उनका के ओह भरतमुनि-परम्परा के कहले बाड़न, जेकर ''नाट्यशास्त्र'' भारतीय नाट्य आ काव्य-शास्त्र के आदिग्रंथ ह। सबसे पहिले रस सिद्धांत के चर्चा एही नाट्यशास्त्र में एह प्रसिद्ध सूत्र- ''विभावनुभाव संचारी भाव संयोगद्रस निष्पतिः'' से कइल गइल बा। भरतमुनि अपना एह नाट्यशास्त्र के उत्पत्ति ब्रह्मा से मनले बाड़न।

भिखारी ठाकुर के अपना भविष्य के जानकारी ही ना रहे बल्कि उनका अपना कृति पर एतना विश्वास रहे कि उनकर ई कृति सब दिनों-दिन उनका कीर्ति में चार चाँद लगाई। एह से मानो ऊ अपना एह विश्वास के उद्घोषणा करत कहत होखस -

''अबहीं नाम भइल बा थोरा, जबई छूट जाई तन मोरा।
तेकरा बाद पचास बरीसा, तेकरा बाद बीस दस तीसा।
तेकरा बाद नाम होई जइहन, पण्डित,कवि,सज्जन, यश गइहन।
नइखीं पाठ पर पढ़ल भाई, गलती बहुत लउकते जाई।''

भिखारी ठाकुर के कहल बात आज साँच साबित हो रहल बा। उनका योगदान के केहू भुला ना सकेला। ओह महान आत्मा के हमार शत-शत नमन आ श्रद्धांजलि।

(ज्योत्स्ना प्रसाद हिंदी साहित्य में पीएचडी बानी। हिंदी में उपन्यास आ कविता प्रकाशित बा। इहाँ के अरबी भाषा के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'अल-रहीना' के हिंदी में अनुवाद कइले बानी। कई गो कविता चीनी आ अंग्रेजी भाषा में भी प्रकाशित बा।)

सिनेमा

मनोज भावुक

सोनवा के पिंजरा में बन्द भइल हाय राम चिरई के जियरा उदास

लोकधुन के सफल चितेरा चित्रगुप्त ना खाली भोजपुरी बलुक हिन्दी फिलिम के संगीत के भी अमर सितारा बानी। उहां के जनम 16 नवम्बर 1917 ई0 के बिहार, गोपालगंज जिला के करमैनी नाम के गांव में भइल। स्कूलिंग सिवान आ बनारस में भइल। पटना विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. आ साथे-साथे पत्रकारिता भी कइनीं। उहां के देश के स्वतंत्रता संग्रामों में भाग लेले रहनीं आ परचा बांटत में रंगइले हाथ पकड़इला पर एक महीना जेलो काटे के पड़ल रहे।

चित्रगुप्त जी के रूचि गीत-संगीत में बचपने से रहे। एक बार पटना में एगो विशाल जनसभा में उहां के नेहरू जी का सामने देश-भक्ति गीत गावे के मौका मिलल। नेहरू जी चित्रगुप्त जी के एतना प्रशंसा कइनीं कि चित्रगुप्त जी गायक बने के फैसला कऽ लेनी। 1945 ई. में अपना एगो छायाकार मित्र मदन सिन्हा (जे बाद में 'इम्तिहान' के निर्देशन कइलन) के प्रोत्साहन आ सहयोग पाके उनहीं का साथे बम्बई चल गइनीं आ आपन किस्मत आजमावे लगनीं। उहां भारतखण्डे संगीत के अध्ययन कइनीं आ बंबई में टिकल रहे खातिर लइकन के संगीत सिखावे के काम कइनीं। बाद में एगो संघतिया सर्वोत्तम बादामी के मार्फत संगीत निर्देशक श्री एस. एन. त्रिपाठी से परिचय भइल जे ओ समय 'अभिमन्यु' में संगीत देत रहनी। त्रिपाठी जी चित्रगुप्त जी के दू-तीन गो गीत दिहनी आ धुन बनावे के कहनी। चित्रगुप्त जी जब धुन बना के दीहनी त त्रिपाठी जी उहां पर मोहा गइनी आ उहां के अपना सहायक के रूप में रख लिहनी। एतने ना, अपना दू-तीन गो फिलिम में संगीत निर्देशक के रूप में अपना नांव के साथे चित्रगुप्त जी के नांव दीहनी।

नौजवान चित्रगुप्त जी 'भगवान मैं तुझको खत लिखता' आ 'सर्दी का बुखार बुरा' (मनचला), 'सिंदबाद' (सिंदबाद द सेलर), 'ये कौन आ गया' (शौकीन) आ 'तेरी ऊंची-ऊंची है दुकान' (किस्मत) जइसन गीतन से पार्श्वगायक के रूप में अपना प्रतिभा के परिचय देनी बाकिर एस. एन. त्रिपाठी जी के सलाह मान के उहां के बाद में आपन ध्यान गायन के बजाय संगीत निर्देशन पर केन्द्रित कर देनी।

शुरूआत में उहां के धार्मिक फिलिम में ज्यादा संगीत देनी। 'शिव भक्त' उ पहिला फिलिम रहे, जहां से लता मंगेश्कर आ चित्रगुप्त जी के साथ शुरू भइल। उ गीत रहे 'बार-बार नाचो'। फेर त करीब 75 गो फिलिम में लगभग 250 गीत लता जी चित्रगुप्त जी के संगीत निर्देशन में गवलीं। मोहम्मद रफी भी आपन सबसे ज्यादा गीत

लोक धुन के अपार भंडार रहनी चित्रगुप्त जी

चित्रगुप्त जी के रूचि गीत-संगीत में बचपने से रहे। एक बार पटना में एगो विशाल जनसभा में उहां के नेहरू जी का सामने देश-भक्ति गीत गावे के मौका मिलल। नेहरू जी चित्रगुप्त जी के एतना प्रशंसा कइनीं कि चित्रगुप्त जी गायक बने के फैसला कऽ लेनी। 1945 ई. में अपना एगो छायाकार मित्र मदन सिन्हा (जे बाद में 'इम्तिहान' के निर्देशन कइलन) के प्रोत्साहन आ सहयोग पाके उनहीं का साथे बम्बई चल गइनीं आ आपन किस्मत आजमावे लगनीं।

चित्रगुप्त जी का संगीत निर्देशन में गवनीं। एह दूनू पार्श्वगायक का साथे चित्रगुप्त जी 1975 ई. में एगो सुपरहिट फिलिम 'भाभी' दीहनीं जेकर 'ओ कारे कारे बादरा जा रे जा रे बादरा', 'चल उड़ जा रे पंछी कि अब ये देश हुआ बेगाना', 'टाई लगा के माना बन गये जनाब हीरो', 'चली चली रे पतंग मेरी चली रे' आ 'छुपा कर मेरी आंखों से, वो पूछे कौन हो जी तुम' जइसन मधुर गीत देश भर में धूम मचा के रख देलन स।

'भाभी' के गीतन के जबरदस्त सफलता के बाद उहां के संगीत के लोहा मनवावे में 'दो दिल धड़क रहे हैं और आवाज एक हैं', (इन्साफ), 'दगा दगा वई वई वई', आ 'लागी छूटे ना अब तो सनम' (काली टोपी लाल रूमाल), 'दिल को लाख संभाला जी' आ 'तेरा जादू न चलेगा ओ सपेरे' (गेस्ट हाउस), 'तेरी दुनिया से दूर चले होके मजबूर' (जब तक), 'दिल का दिया जला के गया ये कौन मेरी तनहाई में' आ 'मुझे दर्दे दिल का पता न था मुझे आप किसलिए मिल गये' (आकाशदीप), 'रंग दिल की धड़कन भी लाती ही होगी' आ 'तेरी शोख नजर का इशारा' (पतंग), 'मुफ्त हुए बदनाम किसी से हाय दिल को लगा के' (बरात), 'दीवाने हम दीवाने तुम' (बेजुबान), 'महलों में रहनेवाली दिल है गरीब का' (तेल मालिश बूट पालिश), 'नगमा ए दिल छेड़ के होठों में क्यों दबा लिया' आ 'पायलवाली देख ना' (एक-राज), 'बांके पिया कहो दगाबाज हो' (वर्मा रोड), 'एक रात में दो-दो चांद खिले' (बरखा), 'चांद को देखो जी' आ 'तेरी आंखों में प्यार मैंने देख लिया' (चांद मेरे आजा), 'अगर दिल किसी से लगाया न होता' (बड़ा आदमी), 'आ जा रे मेरे प्यार के राही' आ 'जाग दिले दिवाना' (ऊंचे लोग), 'तुमने हंसी ही हंसी में क्यों दिल चुराया जवाब दो' (घर बसा के देखो), 'आधी ना रात को खनक गया मेंरा कंगना' (तूफान में प्यार कहां), 'छेड़ो न मेरी जुल्फें' आ 'मचलती हुई हवा में छमछम' (गंगा की लहरें), 'कोई बता दे दिल है जहां' आ 'तुम्ही हो माता पिता तुम्ही हो' (मैं चुप रहूंगी) जइसन अमर गीतन के अनमोल धरोहर चित्रगुप्त जी के आम जीवन से जुड़ल संगीतकार के रूप में स्थापित क देलस। बाकिर शोहरत के ओह चकाचौंध से उहां के हमेशा वंचित राखल गइल, जवना के उहां के हकदार रहनी। एतना प्रभावशाली भइला का बावजूद उहां के बड़ सितारा वाली बड़ फिलिम ना मिल पावल, काहे कि उहां के कवनो गिरोह भा गुट में शामिल ना रहनी। जइसे कि राजकपूर, शम्मीकपूर आ राजेन्द्र कुमार के साथ शंकर जयकिशन, दिलीप कुमार के साथ नौशाद आ देवानंद के साथ एस. डी. वर्मन।

अब बात चित्रगुप्त जी के भोजपुरी फिलिमन के। कहल जाला कि चित्रगुप्त जी के पाले लोक धुन के अपार भंडार रहे तबे नू 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' के निर्माता शाहाबादी जी अपना फिलिम में संगीत निर्देशन खातिर चित्रगुप्त जी के चुननीं। गीतकार शैलेन्द्र जी का साथे चित्रगुप्त जी एह फिलिम में 'हे गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो, सइयां से कर द मिलनवा', 'काहे बंसुरिया बजवलऽ', 'सोनवा के पिंजरा में बन्द भइल हाय राम चिरई के जियरा उदास' जइसन हृदयस्पर्शी गीत लता आ रफी के आवाज में दीहनी, जवना के खूब लोकप्रियता मिलल। एह फिलिम के सफलता में संगीत के सबसे बड़ हाथ रहे। फेर त भोजपुरी सिनेमा में उहें के संगीत के एकछत्र राज्य हो गइल। बलम परदेसिया, हमरी दुलहिनिया, सैंया ले जा तू गवनवा, भैया दूज, बिहारी बाबू, गंगा किनारे मोरा गांव, पिया के गांव, धरती मइया, दुलहिन, गंगा कहे पुकार के, विरहिन जनम-जनम के, हमार भौजी, गोदना, पान खाए सइयां हमार, सेनुर आदि कई गो फिलिम में उहां के संगीत दीहनी।

1974 के आस-पास उहां के लकवा मार देलस आ उहां के शारीरिक रूप से बहुते कमजोर हो गइनी। करीब ढाई सौ (250) फिलिम में बारह सौ (1200) से अधिक गीतन के संगीतकार चित्रगुप्त जी जीवन के अन्तिम क्षण में भले ही संगीत के क्षेत्र में सक्रिय ना रहनी बाकिर उहां के ई संतोष रहे कि उहां के बेटा आनन्द आ मिलिंद ओह सुमधुर संगीत परम्परा के आगे बढ़ा रहल बाड़न। संजोग देखीं कि 14 जनवरी के मकर संक्रांति का दिने जब आकाश में रंग बिरंगा पतंग उड़ावल जात रहे आ पतंगे का तरे मन में एगो प्यारा सा गीत उड़ान भरत जात रहे 'चली चली रे पतंग मेरी चली रे'...... केकरा मालूम रहे कि संगीत के आकाश पर सुरीला गीतन के पतंग उड़ावे वाला चित्रगुप्त जी ओही दिन ई संसार छोड़ देब ...... ठीक अपना गीते का तरे -'चल उड़ जा रे पंछी कि अब ये देश हुआ बेगाना।'

आलेख

तारकेश्वर राय 'तारक'

देंखीं, कहिया भेटाला
सही मायने में गणतंत्र

कोविड-19 से उपजल समस्या अउरी कुफुत के बीच देश आपन 72वां गणतंत्र दिवस मना चुकल बा। परम्परा के निभावे के त बटले बा लेकिन पारम्परिक भब्यता एह बेर देखे के ना मिलल। दिल्ली में आयोजित मुख्य परेड में सामिल होखे वाला जवान आ झांकी के गिनती भी पहिले के मुकाबला आधे रहे अउरी परेड हर साल लाल किला पर खत्म होला एह बेर नेशनल स्टेडियम पर ही खतम हो गइल। जवन पूरा दूरी के आधे रहे। सरकारी फरमान के चलते दर्शक के संख्या भी सीमित रहे।

ए बेर के गणतंत्र दिवस यानी 26 जनवरी 2021 बहुते चीज के चलते खास रहल। कई गो अनोखा रेकार्ड बनल। पांच दशक बाद कवनो बिदेशी मेहमान से महरूम रहल ई राष्ट्रीय पर्व, हं पड़ोसी देश बांग्लादेश के सैनिक दस्ता जरूर परेड में आपन जलवा देखवलस। सबेरे दुनियाँ राजपथ पर जवान के परेड देखलस त दुपहरिया बाद बाहरी दिल्ली में किसान संगठन द्वारा प्रायोजित ट्रैक्टर परेड भी देखलस।

अपना देश के इतिहास में ई पहिले मोका रहे जब किसान के हेतना बड़ संख्या गणतंत्र दिवस के मोका पर आपन ट्रैक्टर परेड निकललस। जेमा करीब 2 लाख ट्रैक्टर के साथे अन्य वाहन भी सामिल रहे। दिल्ली पुलिस कुछ शर्त पर परेड के इजाजत दिहलस। शर्त रहे तय रूट पर ही परेड होखो। भड़काऊ भाषण अउरी हथियार के मनाही रहे। 5 हजार ट्रैक्टर ही परेड में शामिल होखी। दुपहर 12 बजे से साँझी के पाँच बजे के समय नियत कइल गइल रहे। ना त ट्रैक्टर खाड़ होखी ना त धरना प्रदर्शन होखी- इहे दिल्ली पुलिस के फरमान रहे।

महीनों से चल रहल किसान आंदोलन तय रुट से हट के अराजक हो गइल। लालकिला के एरिया जवन 26 जनवरी के आम आदमी खातिर बन्द रहेला। लोकतंत्र के शान के तौर पर लालकिले के प्राचीर पवित्र प्रतीक ह, ई ऊ स्थल ह जवन हमनीके याद दिलावेला कि लमहर संघर्ष के बाद हमनीके आजाद भइनी जा। ओहिजे फहरात तिरंगा हमनी खातिर गौरव ह, लेकिन उपद्रवियन के एह मूल्यन से

आंदोलन के जल्दी खत्म होखे के त असार नजर नइखे आवत। बातचीत पर भी बिराम लाग गइल, सरकार गेना किसान संगठन की ओर डगरा देले बिया। किसान संगठन तय करी की अब बातचीत के एजेंडा का रही ? नीक बात त ई कहाइत कि किसान संगठन 26 जनवरी के दिन के ट्रेक्टर रैली खातिर ना चुनित, एसे राष्ट्र के गरिमा अउरी आंदोलन के पवित्रता दुनो बनल रहित।

का लेवे देवे के बा। ओहिजा आन्दोलनकारी कानून के तोड के ना सिर्फ ढुकलन बल्कि लाल किले के शान पर गोड़ रखके अउरी अराजकता क झंडा लहरा दिहलन। डंडा तलवार भांजत प्राचीर पर चढ़ के तोड़ फोड़ के वीडियो समाचार न्यूज चैनल पर साफ देखल जा सकत बा। पुलिस बल प्रयोग क सकत रहे, हथियार के प्रयोग कर सकत रहे लेकिन संयम के प्रयोग करत सहानुभूति के दामन छोडलस ना। देश खातिर अपना गणतंत्र लोकतंत्र खातिर ई बहुते शर्म के बात बा।

एह पावन मोका पर देश आपन आन बान शान सैन्य शक्ति आधुनिक साजो सामान सुख-समृद्धि के प्रदर्शन करेला जेकरा के पूरा विश्व देखेला। किसान के एह तरह के विरोध प्रदर्शन एकरा रंग के फीका क के रख दिहलस। इहे हमनीके संविधान के खूबसूरती ह कि एकरा लागू होखे के दिन ही आंदोलनरत किसान शांतिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन करे के संवैधानिक अधिकार के बेजा इस्तेमाल कइलस। देश के ई पहिला बिरोध प्रदर्शन ना रहे, एकरा पहिले भी जेपी मोभमेट, महेन्द्र सिंह टिकैत के अगुवाई में किसान आंदोलन, अन्ना आंदोलन अउरी बहुते आंदोलन भइल रहे लेकिन कवनो आंदोलन में राष्ट्रीय पर्व के दिन के बिरोध के दिन के रूप में ना चुनल गइल रहे।

लोकतंत्र में बिरोध के हक बा लेकिन उ हठ ना बने के चाही। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर एह कानून पर डेढ़ बरिस खातिर रोक लाग गइल बा। जांच खातिर कमेटी के गठन हो गइल बा। सरकार भी सहमत बा अगिला आदेश तक कानून लागू ना करे खातिर। फेरु आंदोलन जारी राखे के जिद्द हठ अधिका लागत बा। कायदा त ई कहता न्यायपालिका पर भरोसा क के शासन के समय दियाव आपन आश्वासन के पूरा करे बदे। ई ना क के खाली कानून रद्द करे के हठ पर अड़ल बा किसान संगठन।

आंदोलन के जल्दी खत्म होखे के त असार नजर नइखे आवत। बातचीत पर भी बिराम लाग गइल, सरकार गेना किसान संगठन की ओर डगरा देले बिया। किसान संगठन तय करी की

अब बातचीत के एजेंडा का रही? नीक बात त ई कहाइत की किसान संगठन 26 जनवरी के दिन के ट्रेक्टर रैली खातिर ना चुनित, एसे राष्ट्र के गरिमा अउरी आंदोलन के पवित्रता दुनो बनल रहित।

गणतंत्र दिवस के दिन ई जरूर चर्चा होखे के चाही कि 26 जनवरी 1950 के लागू भइल संविधान के 71 बरिस पूरा हो गइल। कुल तय लक्ष्य भेटाइल का? जबाब त ना ही बा। भारत आजुवो सामाजिक लोकतंत्र आर्थिक लोकतंत्र के मूल स्वरूप के स्थापित करे में कामयाब नइखे भइल। राजनीतिक लोकतंत्र के ही हमनीके गणतंत्र मान लिहनी जा। सात दशक बाद जहवाँ एकता, बिकास, सम्पन्नता लउके के चाही न्याय सर्व सुलभ होखे के चाही। ओहिजे समाजिक विभाजन भइल बा। बिकास कुछेक क्षेत्र कुछेक वर्ग तक ही सिमटल बा। आर्थिक असमानता के खाई दिन प दिन चाकरे होत जाता। न्याय रसूखदार के पाकिट में बा। सभके नसीब नइखे। आम आदमी त मुड़ी नवाके झुकले बा कबो सबल रसूखदार के आगे, कबो सत्ता के, कबो शासन के आगे, कबो बेवस्था के आगे, कबो ...। देखीं कहिया भेटाला सही मायने में गणतंत्र।

गण अउरी तंत्र दूनों स्वस्थ रहे, खुशहाल रहे,एक दूसरे के पर्याय बनो।

शंकर मुनि राय 'गड़बड़'

ई गारी परान पियारी जी--!

भोजपुरी समाज में गारी के बहुते महिमा बा। ई सुनलो जाला आ सुनावलो जाला, गावलो जाला आ बकलो जाला। कबो अदिमी गारी सुन के खिसिया जाला त कबो गारी सुने खातिर खिसिया जाला। गारी कबो मान-मरजादा गिरा देले त कबो आदर से पलंगरी पर चढ़ा देले। गारी आपुस में मुंहफुलौवल करा देले आ कबो रसघस्सी बन के भीतर से पिनपिना देले। बड़ी महिमा बा एह गारी के...! कबो मंगल गारी त कबो जेवनारी गारी! कबो दुलरुई गारी त कबो चिहुल बाजी में सरवा-ससुरा के नेवता-हँकारि!

रिश्तेदारी में रूसा-फूली ना भइल त बियाह का! कबो दूल्हा के बाबूजी रुसिहें त कबो दूल्हा के रुसे खातिर उनुकर मामा, फूफा, पाहुन लोग बुद्धिमानी से टिटकारी दिहन! रुसलन त ठीक, ना त 'बकलोल दूल्हा' के गारी सुनके जइहें। बेटहा के त हरमेसा रुसे के बा, बाकिर ई लहरा के लगवले ह? ई लहरा बिटिहे लोग पहिले शुरू कइले ह! बियाह ठीक भइल त लईकी के बाबूजी कहले रहन कि जबले गारी ना सुनब, तबले रउआ घरे ठहरी पर ना बईठब! कतनो लोग कहल कि बीजे करे चलीं, सेराता भोजन, बाकिर ना, एके जिद्द कि गारी सुनवाईं तब!

गोतिया-देयाद में बोलावा गइल आ तनिके देरी में बुढ़िया फुआ से लेके बुढ़िया आजी लोग के जुटान हो गइल हवेली में आ शुरू हो गइल स्वागत गारी-

राजा दशरथ जी के आवन सुनिके गलियन फूल बिछायो जी!
जेंवहीं चलेले समधी कवन समधी चटचट बाजेला खराऊ जी!
सोने के थारी में जेवना परोसलो जेंवे चलेले सगासोरी जी!
दालहिं भात मएदा के रोटी, परवर गजब बनायो जी !

गारी आ जेवनारी दूनो एके संगे शुरू भइल। मुसकिया-मुसकिया के खात रहन नयका समधी कि बुढ़िया फुआ समधिन के नाव पुछली कवनो से आ एके बेरी कढ़ा देली लगुहा गारी--

फूल लोढ़े चलेली छिनरो कवन छिनरो
गोड़ गइल बिछिलाई जी!
बगिया के राजा मोर भइया जब देखले
गोदिया में लिहले उठाई जी!
चूमिचामी पोंछले कवन बो के गलिया
देहियां दिहले सुघुराई जी!

ई गारी सुनके सब केहू ठठाके हंसल आ सियावर रामचंद्र की जय के जयकारा लगावल तले मेहिंये राग में एगो अउरी गारी सुनाइल--

रउआ राजा महाराजा, रउआ राजा महाराजा!
हमरा गरीबवन पर दाया करीं!
रउआ गइया भँइसिया, रउआ गइया भँइसिया
हमारा सांडवा-भैंसवन पर दाया करीं !
रउआ छेरिया बकरिया, रउआ छेरिया-बकरिया
हमरा बोकवन पर दाया करीं!

सब केहू खुश! बेटिहा समधी कहलन-- समधी जी! आई हमरा किहाँ, एह गारी के बदला चुकाइब तिलक में! हम केहू के उधारी ना राखीं...! अगुआ कहलन-जरूर-जरूर--!

(लेखक शंकर मुनि राय 'गड़बड़' शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनाँदगाँव, छत्तीसगढ़ में हिंदी के विभागाध्यक्ष बानी।)

कविता

अविनाश चंद्र विद्यार्थी

भोजपुरी के स्वनामधन्य कवि अविनाश चंद्र विद्यार्थी जी के जन्मदिन ह 24 जनवरी। 'सेवकायन' इहां के प्रसिद्ध महाकाव्य ह जवन भोजपुरी अकादमी पटना से 1984 में प्रकाशित भइल रहे। हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' जइसन विद्वान महाकाव्य 'साकेत' से एह किताब के तुलना कइलस। विद्यार्थी जी के एगो अउर काव्य पुस्तक बा 'पंखुरी भइल हजार'। इहो 1984 में ही प्रकशित भइल रहे। बरवय छंद में अद्भुत किताब बा ई। उहां के कौशिकायन कमाल के ग्रंथ बा। कविता त कविता उहां के गद्य भी एतना लयात्मक होला कि बेर-बेर पढ़े के मन करेला।

भोजपुरी खातिर समर्पित एह महाकवि के 'भोजपुरी जंक्शन' परिवार के तरफ से नमन। पेश बा उहां के लिखल एगो कविता- संपादक

डहकत बा परान बिना मीत के

कुँहुँकत बा जहान बिनु गीत के
डहकत बा परान बिनु मीत के।

हरिअरिया बे-फुहार के झुरात बा
फुलवरिया ई बहार में धुँवाँत बा
धन्हकत बाटे आँचि अनरीत के।

बा लहरिया, ना नजरिया में हुलास बा
लहवरिया में नगरिया ई उदास बा
चहकत बा बिचार हार-जीत के।

मोहेला अल्हड़ करेज तनिक छोह से
सोहे ना बचनियाँ मुँह में मन का द्रोह से
सहकत बा सिंगार बे-पिरीत के।

झलकी रूप-रंग असली नवका भोर में
तनिका नेहिया लगवले जा अँजोर में
लहकत बाटे जियरा दियरा हीत के
डहकत बा परान बिना मीत के।

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

हम भोजपुरिआ के सफर

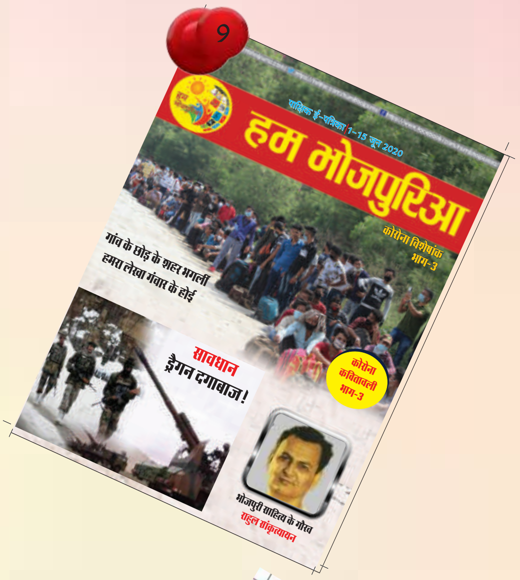

पढ़ीं भोजपुरी

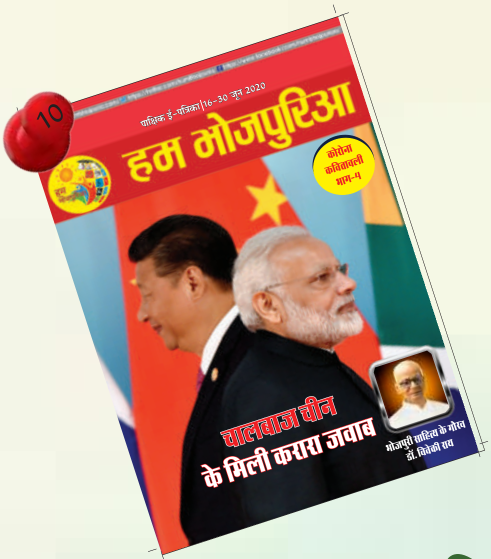

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

The 21st century gurukul
Over 80 acres of campus | One of the largest in Dehradun
THE INDIAN PUBLIC SCHOOL
The Indian Public School adheres to the modern education system while incorporating the traditional gurukul system.
Over 80 Acres of Campus
Language and Design Labs | Separate Art & Music Block for
Visual and Peforming Arts | World-Class Sporting Facilities
For more information/campus tour, contact:
ADMISSIONS OPEN
www.indianpublicschool.com
Kindergarten to XII | Co-educational | Fully residential | National Curriculum Framework